पी. एण्ड एस. बैंक

राजभाषा अंकुर

मार्च, 2026

पंजाब एण्ड सिंध बैंक
Punjab & Sind Bank
ਪੰਜਾਬ ਐਂਡ ਸਿੰਧ ਬੈਂਕ
(भारत सरकार का उपक्रम / A Govt. of India Undertaking)
राजभाषा विभाग

अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस - 2026

पंजाब एण्ड सिंध बैंक ने किदवई नगर स्थित कॉरपोरेट कार्यालय में अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस पर विशेष कार्यक्रम का आयोजन किया। कार्यक्रम में पद्म श्री, अर्जुन पुरस्कार और खेल रत्न विजेता डॉ. दीपा मलिक को मुख्य अतिथि के रूप में आमंत्रित किया गया था। अपने संबोधन के दौरान डॉ. मलिक ने बैंक महिला कार्मिकों के साथ अपने जीवन की महत्वपूर्ण घटनाओं को साझा किया। देश में बैंक की विभिन्न शाखाओं में पदस्थ महिला कार्मिकों को वेबिनार के माध्यम से इस कार्यक्रम से जोड़ा गया था। इस अवसर पर बैंक के प्रबंध निदेशक व मुख्य कार्यपालक अधिकारी श्री स्वरुप कुमार साहा, कार्यपालक निदेशक श्री राजीवा तथा अन्य कार्यपालक उपस्थित रहें।

पंजाब एण्ड सिंध बैंक

प्रधान कार्यालय राजभाषा विभाग की हिंदी पत्रिका

राजभाषा अंकुर

(केवल आंतरिक वितरण हेतु)

बैंक हाउस, प्रथम तल, 21, राजेन्द्र प्लेस, नई दिल्ली – 110008

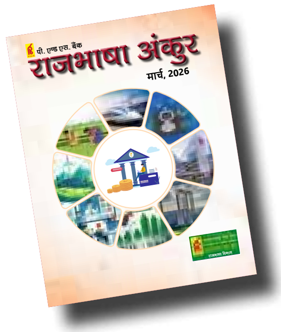

मार्च, 2026

मुख्य संरक्षक

श्री स्वरूप कुमार साहा
प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी

संरक्षक

श्री रवि मेहरा
कार्यपालक निदेशक

श्री राजीवा
कार्यपालक निदेशक

मुख्य संपादक

श्री गजराज देवी सिंह ठाकुर
महाप्रबंधक सह मुख्य राजभाषा अधिकारी

संपादक व प्रकाशक

श्री निखिल शर्मा
मुख्य प्रबंधक (राजभाषा)

संपादक समिति

श्री देवेन्द्र कुमार, वरिष्ठ प्रबंधक (राजभाषा)
श्री बिभाष कुमार, वरिष्ठ प्रबंधक (राजभाषा)
श्रीमती भारती, प्रबंधक (राजभाषा)

ई-मेल : ho.rajbhasha@psb.bank.in
पंजीकरण संख्या : एफ.2 (25) प्रैस.91

'राजभाषा अंकुर' में प्रकाशित सामग्री में दिए गए विचार, संबंधित लेखकों के अपने हैं। पंजाब एण्ड सिंध बैंक का प्रकाशित विचारों से सहमत होना जरूरी नहीं है। सामग्री की मौलिकता एवं कॉपीराइट अधिकारों के प्रति भी लेखक स्वयं उत्तरदायी हैं।

मुद्रक : जैना ऑफसेट प्रिंटर्स
ए 33/2, साइट-4, साहिबाबाद इंडस्ट्रीयल एरिया
गाजियाबाद, उत्तर प्रदेश
मोबाइल : 98112-69844

विषय सूची

क्र. सं.	विवरण	पृष्ठ सं.
1.	संपादक मंडल/विषय-सूची	1
2.	आपकी कलम से	2
3.	संपादकीय	3
4.	देश की अर्थव्यवस्था में महिला उद्यमिता	4-6
5.	आंचलिक कार्यालय मोगा का उद्‌घाटन	7
6.	विकसित भारत @2047 में बैंकों की भूमिका	8-9
7.	हिंदी कार्यशाला	10-11
8.	बैंकिंग उद्योग में कृत्रिम बुद्धिमत्ता	12-15
9.	संसदीय राजभाषा समिति का स्वर्ण नगरी दौरा	16-17
10.	बैंक कार्मिकों का मानसिक स्वास्थ्य	18-21
11.	मेगा टाउन हाल मीटिंग - दिल्ली	22-23
12.	जुगाड़	24-27
13.	नराकास फरीदकोट छमाही बैठक	27
14.	काव्य-मंजूषा	28-29
15.	ओड़िआ लेख - लोक कवि डॉ. हलधर नाग	30-31
16.	ओड़िआ लेख का हिंदी अनुवाद	32-33
17.	शाखा शुभारंभ	34
18.	आलेख एवं साक्ष्य उप समिति का चेन्नै दौरा	35
19.	हिंदी एवं भारतीय भाषाओं का सह संबंध	36-38
20.	नराकास उपलब्धियां	39
21.	ग्राहक दृष्टिकोण	40-41
22.	कन्याकुमारी - यात्रा संस्मरण	42-44

"राजभाषा अंकुर" पत्रिका का दिसंबर-2025 अंक पढ़ने का अवसर प्राप्त हुआ। यह अंक विषय-वस्तु, प्रस्तुति तथा भाषा की दृष्टि से अत्यंत सराहनीय और उपयोगी है। इस अंक में सामाजिक विषयों, नैतिक मूल्यों, पारिवारिक संबंधों तथा मानवीय संवेदनाओं से जुड़े लेख विशेष रूप से प्रभावशाली लगे। "बेटा, डर मत! ये बैंक वाले अंकल हैं", "कलाकार", "बैंक परिसर में अग्नि रोकथाम" जैसे लेखों के माध्यम से समाज और बैंकिंग से जुड़े महत्वपूर्ण पहलुओं को सरल और प्रभावी ढंग से प्रस्तुत किया गया है। इसके अतिरिक्त "काव्य-मंजूषा" में प्रकाशित कविताएं भी अत्यंत भावपूर्ण और प्रेरक हैं।

पत्रिका में बैंक की विभिन्न उपलब्धियों, कार्यक्रमों तथा राजभाषा संबंधी गतिविधियों का समुचित विवरण भी दिया गया है जिससे कर्मचारियों में हिंदी के प्रति रुचि और उत्साह बढ़ता है। साथ ही पत्रिका की साज-सज्जा, चित्रों का चयन तथा पृष्ठ विन्यास भी आकर्षक और संतुलित है जो इसे और अधिक पठनीय बनाता है। मेरी ओर से संपादक मंडल तथा सभी रचनाकारों को इस उत्कृष्ट प्रकाशन के लिए हार्दिक बधाई। आशा है कि भविष्य में भी "राजभाषा अंकुर" इसी प्रकार ज्ञानवर्धक, प्रेरणादायक और उपयोगी सामग्री के साथ प्रकाशित होती रहेगी।

- हरीश सिंह चौहान
उप निदेशक (कार्यान्वयन) एवं कार्यालयाध्यक्ष
क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय (पश्चिम), गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग

मुझे पंजाब एण्ड सिंध बैंक की त्रैमासिक गृह-पत्रिका 'राजभाषा अंकुर' (दिसंबर 2025 अंक) प्राप्त हुई, जिसके लिए मैं आपका धन्यवाद करता हूँ। 'वीर बाल दिवस' पर केंद्रित यह विशेषांक न केवल सूचनात्मक है, बल्कि अत्यंत प्रेरणादायक भी है। पत्रिका में '**बाल मनोविज्ञान**' और '**भारतीय अर्थव्यवस्था पर भाषाओं का प्रभाव**' जैसे गंभीर विषयों को जिस सहजता के साथ प्रस्तुत किया गया है, वह सराहनीय है।

विशेष रूप से, बैंकिंग और अर्थव्यवस्था जैसे तकनीकी क्षेत्रों में हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा देने का आपका यह प्रयास प्रशंसनीय है। श्याम बेनेगल के सिनेमा पर आधारित लेख और मुंशी प्रेमचंद की कहानियों का समावेश पत्रिका के साहित्यिक पक्ष को समृद्ध करता है। साथ ही, '**बैंक परिसर में अग्नि रोकथाम**' जैसे व्यावहारिक विषयों पर जानकारी देकर आपने इसे और अधिक उपयोगी बनाया है। इस उत्कृष्ट संपादन और राजभाषा हिंदी के प्रति आपके समर्पण हेतु पूरी संपादकीय टीम को आईएफसीआई की ओर से हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं।

-अतुल झाड़े
महाप्रबंधक (प्रभारी-राजभाषा विभाग)
आईएफसीआई लिमिटेड, दिल्ली

आपकी पत्रिका "राजभाषा अंकुर" प्राप्त हुई। पत्रिका में सम्मिलित आलेख, कविताएं, समाचार आदि स्तरीय एवं ज्ञानवर्धक है। राजभाषा के प्रगामी प्रयोग की दिशा में यह एक सराहनीय कदम है। पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य की कामना करते हुए इससे जुड़े सभी कार्मिकों, रचनाकारों को हार्दिक बधाई देता हूं।

-डॉ. छबिल कुमार मेहेर
उप निदेशक (कार्यान्वयन)
क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय (उत्तरी क्षेत्र -2), गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग

आपकी हिंदी तिमाही पत्रिका 'राजभाषा अंकुर' दिसंबर, 2025 अंक की प्रति हमें प्राप्त हुई। एतदर्थ हार्दिक धन्यवाद। 'राजभाषा अंकुर' पत्रिका का यह अंक 'वीर बाल दिवस विशेषांक' है जिसमें 'सतर्क बालमन- सुरक्षित भविष्य', 'बाजारवाद और हम' तथा 'भारतीय अर्थव्यवस्था पर भारतीय भाषाओं का प्रभाव' लेख अत्यंत सराहनीय है। काव्य-मंजूषा के अंतर्गत 'मुझे मेरे शरारती दोस्त चाहिए' तथा 'देह के निशान' वर्तमान में भी बाल समय की यादें ताज़ा करने वाली कविताएं है।

पत्रिका के इस अंक में प्रकाशित सृजनात्मक लेखों हेतु रचनाकारों को अनंत शुभकामनाएं एवं संपादक मंडल को हार्दिक बधाई।

-डॉ. हेमलता
मुख्य प्रबंधक एवं प्रभारी – राजभाषा
यूको बैंक, प्रधान कार्यालय कोलकाता

संपादकीय

प्रिय पाठकगण,

वित्तीय वर्ष 2025-26 का चतुर्थ अंक आपके समक्ष प्रस्तुत है। व्यवसायिक संगठनों के लिए वित्तीय वर्ष की अंतिम तिमाही महत्वपूर्ण होती है। वर्ष के दौरान जिन लक्ष्यों की प्राप्ति नहीं हो पाई है, उनकी प्राप्ति के लिए यथासाध्य प्रयास किया जाता है। निर्धारित लक्ष्यों की प्राप्ति के आधार पर हमारे कार्य-निष्पादन का आंकलन तो होता ही है, साथ ही संगठन का वित्तीय लाभ भी इस पर निर्भर करता है तथा लाभ-हानि के आधार पर संगठन के लिए भविष्य की योजना तैयार की जाती है। यह कहा जा सकता है कि किसी संगठन का लाभार्जन व उसके भविष्य की रूपरेखा में प्रत्येक कार्मिक का महत्वपूर्ण योगदान होता है। सामूहिक प्रतिबद्धता और आपसी समन्वय से किए गए प्रयास के परिणाम हमेशा दीर्घकालिक होते हैं। चालू वित्त वर्ष में अपने पदचिह्नों का विस्तार करते हुए बैंक ने देश में महत्वपूर्ण भौगोलिक स्थानों पर अपनी शाखाएं आरंभ की है तथा शीघ्र ही देश के अनेक राज्यों में बैंक अपने आंचलिक कार्यालय संचालित करने जा रहा है। इससे ग्राहकों के लिए हमारी बैंकिंग सेवाएं त्वरित और सुलभ हो सकेगी।

वैश्विक बाजार अभी युद्ध से प्रभावित है। विश्व के शक्तिशाली देश अपना प्रभुत्व स्थापित करने के लिए संघर्ष कर रहे हैं। इन सबसे परे भारतीय संस्कृति की मूल विचारधारा सदैव 'वसुधैव कुटुंबकम' की रही है जो किसी एक के प्रभुत्व के स्थान पर उदार और समावेशी दृष्टिकोण को सर्वोपरि मानता है। विश्व-परिवार का चिंतन हमारे समाज में प्रारब्ध से ही विद्यमान है। यह अवधारणा इस विचार को व्यक्त करती है कि पूरी दुनिया और उसके सभी निवासी आपस में जुड़े हुए हैं और उनके साथ ऐसा व्यवहार किया जाना चाहिए मानो वे एक ही परिवार का हिस्सा हों। एक ऐसा परिवार जिसमें सीमा, भाषा और विचारधारा का कोई बंधन ना हो। मूलतः यह विभिन्न संस्कृतियों और राष्ट्रों के बीच वैश्विक एकता, शांति और आपसी समझ के महत्व पर ज़ोर देता है। भारत से बाहर भी इस अवधारणा को एकता, सहिष्णुता और वैश्विक शांति के एक सार्वभौमिक संदेश के रूप में अपनाया जा रहा है। यह सिद्धांत हमारी साझा मानवता पर बल देकर व्यक्तियों, समुदायों और राष्ट्रों को मिलकर कार्य करने के लिए प्रोत्साहित करता है ताकि संघर्षों को शांतिपूर्ण ढंग से सुलझाया जा सकें।

भारतीय बाजार भी वैश्विक उथल-पुथल से अछूता नहीं है। तथापि, जिम्मेदार नागरिक होने के नाते हमारा यह कर्तव्य है कि हम झूठी अफवाहों से बचें तथा व्यक्तिगत संचय की प्रवृत्ति को बढ़ावा न दें। किसी भी जानकारी को साझा करने से पहले आधिकारिक स्रोत या विश्वसनीय समाचार माध्यमों पर उसकी जांच करें। प्रायः, लोगों में भ्रम या संदेह पैदा करने या समाज में अस्थिरता पैदा करने के उद्देश्य से निराधार सूचना प्रसारित की जाती है। सोशल मीडिया के दौर में इनकी गति और भी बढ़ गई है इसलिए हमें अधिक सतर्क रहने की आवश्यकता है। पत्रिका के इस अंक में विविध साहित्यिक लेख तथा बैंक की आंतरिक गतिविधियों को संकलित किया गया है। पत्रिका के इस अंक के लिए आपकी प्रतिक्रिया का हमें इंतजार रहेगा।

(गजराज देवी सिंह ठाकुर)
महाप्रबंधक सह मुख्य राजभाषा अधिकारी

गीतांजली हेटलो

देश की अर्थव्यवस्था में महिला उद्यमिता

भारत की सभ्यता ने सदियों से "यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता" का संदेश दिया है परंतु विडंबना यह है कि लंबे समय तक महिलाएं सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक निर्णयों से दूर रखी गईं। आज का भारत बदल रहा है, एक नए विचार और दृष्टिकोण से प्रगति कर रहा है। अब महिला केवल घर की सीमाओं में बंधी नहीं, बल्कि वह उद्योग, व्यापार और नवाचार की दिशा तय कर रही है। भारत जैसे विशाल और विकासशील देश की अर्थव्यवस्था तब तक अपनी पूर्ण क्षमता तक नहीं पहुंच सकती, जब तक उसकी आधी आबादी यानी महिलाएं, आर्थिक विकास की मुख्यधारा में सक्रिय रूप से शामिल न हों। सदियों तक सामाजिक बंधनों और पितृ-सत्तात्मक सोच की बेड़ियों से जकड़ी रही भारतीय नारी आज न केवल अपने घर की, बल्कि पूरे राष्ट्र की अर्थव्यवस्था की धुरी बन रही हैं। आज जहां एक ओर भारत दुनिया की सबसे तेजी से बढ़ती अर्थव्यवस्थाओं में से एक है, वहीं इस विकास की यात्रा में महिलाओं की बढ़ती भागीदारी एक नया अध्याय लिख रही है। पारंपरिक रूप से महिलाओं को केवल गृहिणी और परिवार की देखभाल करने वाली माना जाता था लेकिन आज वही महिलाएं उद्यमिता की दुनिया में अपनी अलग पहचान बना रही हैं। वे केवल नौकरी करने वाली नहीं, बल्कि नौकरी देने वाली बन रही हैं। एक महिला उद्यमी केवल कारोबार नहीं खड़ा करती, वह आने वाली पीढ़ियों के लिए संभावनाएं खड़ी करती है। यह एक ऐसी श्रृंखला है जो आर्थिक आत्मनिर्भरता को बढ़ावा देती है। यह उनके अदम्य साहस, दृढ़ संकल्प और असाधारण प्रतिभा का ही प्रमाण है कि वे हर क्षेत्र में नए कीर्तिमान स्थापित करने में सक्षम हो रही हैं। विश्व बैंक की एक रिपोर्ट के अनुसार यदि भारत की महिला श्रम-शक्ति की भागीदारी पुरुषों के बराबर हो जाए तो हमारे देश का जीडीपी

27% तक बढ़ सकता है। यह आंकड़ा दर्शाता है कि महिला शक्ति का अर्थव्यवस्था में योगदान केवल विकल्प नहीं, बल्कि आवश्यकता है।

आज़ादी के बाद से भारत की महिलाएं रातों-रात आज़ाद नहीं हुई, उन्हें अपने हक और सम्मान के लिए बहुत संघर्ष करना पड़ा। यह शिक्षा के प्रसार, तकनीकी क्रांति, सरकारी नीतियों के समर्थन और सबसे महत्वपूर्ण सामाजिक सोच में आए महत्वपूर्ण बदलाव का परिणाम है। आज की महिलाएं शिक्षित है और अपने अधिकारों के प्रति जागरूक हैं। वे जानती हैं कि उनकी क्षमताएं रसोई की दीवारों तक सीमित नहीं है। शिक्षा ने उन्हें आत्मविश्वास दिया है जिससे वे नए विचारों को जन्म दे रही हैं और उन्हें व्यवसाय में बदल रही है। डिजिटल इंडिया ने महिलाओं के लिए नए रास्ते खोले हैं। आज एक ग्रामीण महिला भी इंटरनेट का उपयोग करके अपने बनाएं उत्पादों को देश भर में बेच सकती है। सोशल मीडिया और ई-कॉमर्स ने उनके लिए एक ऐसा बाजार खोल दिया है जो पहले केवल बड़े शहरों तक सीमित था। धीरे- धीरे ही सही समाज यह स्वीकार कर

रहा है कि एक महिला उद्यमी केवल एक व्यक्ति नहीं, बल्कि एक परिवार और समाज की आर्थिक शक्ति का प्रतीक है। जब एक महिला सफल होती है तो वह न केवल अपने परिवार को गरीबी से बाहर निकालती है बल्कि परिवार के लोगों की जीवन प्रत्याशा में भी वृद्धि करती है। जब एक ओर पुरुष, घर की आर्थिक स्थिति को संभालता है तब दूसरी ओर महिला उस घर की दशा को संवारती है। इस रूप में परिवार के अन्य सदस्य विशेषकर अपने बच्चों, बेटियों के लिए एक प्रेरणा भी बनती है।

आज के भारत में जहां विभिन्न योजनाएं एवं परियोजनाएं संचालित की जा रही है, वहीं भारत सरकार ने महिला उद्यमिता को बढ़ावा देने के लिए अनेक योजनाएं शुरू की हैं। 'मुद्रा योजना' जैसी पहलें महिलाओं को छोटे व्यवसाय शुरु करने के लिए आसान शर्तों पर ऋण उपलब्ध करा रही है। 'स्टैंड-अप- इंडिया' जैसी योजनाएं अनुसूचित जाति/ जनजाति और महिला उद्यमियों को वित्तीय सहायता और मार्गदर्शन प्रदान कर रही है। इन योजनाओं ने वित्तीय संसाधनों तक महिलाओं की पहुंच को आसान बनाया है जो अक्सर उनके लिए सबसे बड़ी चुनौती होती है। भारत की वास्तविक ताक़त गांवों में है। यहां स्वयं सहायता समूह (SHG) की महिलाएं छोटे-छोटे व्यवसाय करके न केवल अपने परिवार बल्कि पूरे गांव की अर्थव्यवस्था को बदल रही हैं। बड़े शहरों से प्रेरणा लेते हुए महिलाएं गांव-गांव में क्रांति विकसित कर रहीं है। श्री महिला गृह उद्योग 'लिज्जत पापड़' इसका सबसे बड़ा और दिल को छू लेने वाला उदाहरण है। वर्ष 1959 में सात गुजराती महिलाओं ने ₹80 के ऋण से पापड़ बनाने का काम शुरु किया था। आज यह एक विशाल सहकारी उद्यम बन चुका है जिसमें 45,000 से अधिक महिलाएं काम करती हैं और जिसका सालाना कारोबार करोड़ों का है। यह कहानी हमें सिखाती है कि सामूहिक शक्ति और दृढ़ता से क्या कुछ हासिल नहीं किया जा सकता। इस प्रकार के अनेक उदाहरण देखे जा सकते हैं जो स्वयं सहायता समूहों के माध्यम से अचार, पापड़, हस्तशिल्प और अन्य घरेलू उत्पाद बनाकर अपनी आजीविका कमा रही है तथा साथ ही अपने परिवारों की आर्थिक स्थिति को मजबूत कर रहीं है। यह केवल दिल्ली, मुंबई जैसे बड़े शहरों से नहीं है बल्कि भारत के अन्य राज्यों में भी है। आंध्रप्रदेश और तेलंगाना की महिलाएं दुग्ध उत्पादन से करोड़ों का कारोबार कर रही हैं। बिहार राज्य की महिलाएं मधुमक्खी पालन और अचार निर्माण से आत्मनिर्भर हो रही है जबकि झारखंड की तसर (रेशम) उत्पादन करने वाली महिलाएं अब अंतरराष्ट्रीय बाजार तक पहुंच रही हैं। यह साबित करता है कि

"जब महिला आगे बढ़ती है तो समाज पीछे नहीं रहता।"

इस क्रांति की सबसे खास बात यह है कि यह केवल आंकड़ों का खेल नहीं है बल्कि यह लाखों सच्ची कहानियों का संग्रह है। ये कहानियां हमें बताती हैं कि कैसे एक छोटे से विचार को जुनून और मेहनत से एक विशाल साम्राज्य में बदला जा सकता है। इन कहानियों में से कुछ प्रेरणादायक महिलाएं की भूमिका प्रमुख है। किरण मजूमदार-शॉ, बायोकॉन की संस्थापक का नाम भारत की सबसे सफल महिला उद्यमियों में से एक है। नायका की संस्थापक फाल्गुनी नायर, पेप्सिको की पूर्व सीईओ इंद्रा नूई तथा वीएलसीसी की संस्थापक वंदना लूथरा इत्यादि अनेक महिला उद्यमियों के उदाहरण समाज को नई दिशा प्रदान करने वाले हैं। महिला उद्यमिता न केवल आर्थिक व सामाजिक सशक्तिकरण का वाहक है बल्कि यह सामाजिक क्रांति का भी परिचायक है। एक अनुमान के मुताबिक भारत के कुल सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यमों में से लगभग 20% महिलाओं के स्वामित्व में हैं जो लगभग 2 करोड़ लोगों को रोजगार प्रदान करते हैं।

महिला उद्यमिता का यह उभार केवल कुछ सफल व्यक्तियों तक सीमित नहीं हैं बल्कि इसका देश की समग्र अर्थव्यवस्था पर एक गहरा और बहुआयामी प्रभाव पड़ रहा है। महिला उद्यमी न केवल खुद के लिए अपितु अपने आसपास की अन्य महिलाओं के लिए भी रोजगार के अवसर पैदा कर रही हैं। यह दर्शाता है कि केवल एक महिला कितनों अन्य महिलाओं के लिए प्रेरणा का स्रोत हैं। सभी महिलाएं आज के युग में विदेशों में भी जाकर अपनी नई पहचान बना रही है। जब महिलाएं व्यवसाय करती है तो वे बैंक खातों, ऋण और अन्य वित्तीय सेवाओं का उपयोग करती हैं। इससे वित्तीय समावेशन बढ़ता है और अनौपचारिक अर्थव्यवस्था का औपचारिक अर्थव्यवस्था

में रूपांतरण होता है। महिलाएं अपने उद्यमों में पर्यावरण के प्रति अधिक संवेदनशील रहती है। जब महिलाएं व्यवसाय शुरु करती है तो वे प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष करों के माध्यम से सरकार की आय बढ़ाती है। यह कर राजस्व देश की बुनियादी सुविधाओं जैसे शिक्षा, स्वास्थ्य, सड़क आदि पर खर्च होता है जिससे समग्र आर्थिक विकास होता है। अपने व्यवसाय में नई सोच, रचनात्मकता और संवेदनशील दृष्टिकोण लेकर आती है, इससे बाज़ार में विविधता आती है और नए उत्पाद व सेवाएं विकसित होते है। यदि महिलाओं को समान और पर्याप्त समर्थन मिले तो भारत की अर्थव्यवस्था नई ऊंचाइयों को छू सकती है और अधिक मजबूत हो सकती है।

लेकिन इस स्वर्णिम यात्रा में अभी भी कई चुनौतियां बाकी हैं। सामाजिक रूढ़िवादिता, काम और परिवार के बीच संतुलन का दबाव, वित्तीय संसाधनों तक सीमित पहुंच और सही मार्गदर्शन की कमी आज भी कई महिला उद्यमियों के लिए बाधा बनी हुई है। इस दिशा में हमें न केवल सरकारी नीतियों को और अधिक प्रभावी बनाना होगा, बल्कि समाज के दृष्टिकोण में भी बदलाव लाना होगा। बैंकों को महिला उद्यमियों के लिए विशेष और लचीले ऋण उत्पाद तैयार करने चाहिए। हमें एक ऐसा पारिस्थितिकी तंत्र बनाना होगा जहां महिला उद्यमियों को न केवल वित्तीय सहायता बल्कि सही परामर्श, नेटवर्क और प्रेरणा भी मिल सके। ग्रामीण और अर्ध-शहरी क्षेत्रों की कई महिलाएं उच्च शिक्षा और तकनीकी प्रशिक्षण से वंचित रहती है। आधुनिक समय में व्यवसाय, डिजिटल और तकनीकी दक्षता पर आधारित है जिससे महिलाएं प्रतिस्पर्धा में पिछड़ जाती है। महिला उद्यमियों को कई बार यात्रा करने, ग्राहकों से मिलने या कार्यस्थल प्रबंधन में सुरक्षा संबंधी समस्याओं का सामना करना पड़ता है। यह समस्या ग्रामीण क्षेत्रों में और भी अधिक गहरी है। कार्य-क्षेत्र में आज भी महिलाओं को पुरुषों की तुलना में कम महत्व दिया जाता है। निवेशक और ग्राहक दोनों ही महिला उद्यमियों की क्षमता पर संदेह करते हैं। अतः समय की मांग है कि महिला उद्यमियों की चुनौतियों को दूर कर उन्हें समान अवसर और प्रोत्साहन प्रदान किया जाए।

आज की महिला उद्यमी केवल व्यवसाय नहीं कर रही है बल्कि वे एक नए भारत का निर्माण कर रही हैं। एक ऐसा भारत जो समावेशी है, सशक्त है और अपनी पूरी क्षमता से विकास कर रहा है। उनकी सफलता की कहानियां केवल व्यापार की नहीं, बल्कि संघर्ष, धैर्य और जीत की कहानियां है। यह केवल आंकड़ों की प्रगति नहीं, बल्कि एक सांस्कृतिक और सामाजिक क्रांति है। भारत की अर्थव्यवस्था में महिलाओं की बढ़ती भागीदारी ने यह साबित कर दिया है कि जब एक महिला को मौका दिया जाता है तो वह न केवल खुद को बल्कि पूरे समाज को आगे बढ़ा सकती है। यह उस भारत की अर्थव्यवस्था की तस्वीर है जहाँ हर महिला को अपनी प्रतिभा को निखारने और अपने सपनों को सच करने का पूरा अधिकार है। यह केवल शुरुआत है क्योंकि जब नारी शक्ति जागती है तो वह केवल घर नहीं बल्कि दुनिया बदल देती है। उद्यमिता की समग्र परिभाषा में नए विचारों को धरातल पर उतारना, जोखिम उठाना व समाज के लिए मूल्य सृजित करना शामिल है और महिलाओं में इस प्रकार के गुण तो नैसर्गिक रूप से ही विद्यमान होते हैं।

- अधिकारी
प्रधान कार्यालय डिजिटल बैंकिंग विभाग
नई दिल्ली

आंचलिक कार्यालय मोगा का उद्घाटन

पंजाब राज्य में बैंक के नए आंचलिक कार्यालय मोगा का उद्घाटन बैंक के प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी श्री स्वरूप कुमार साहा के कर कमलों से किया गया। इसके साथ ही पंजाब राज्य में बैंक की कुल आंचलिक कार्यालयों की संख्या बढ़कर 10 हो गई हैं। उद्घाटन के पश्चात प्रबंध निदेशक महोदय ने श्री प्रकाश चंद्र मिश्रा को पुष्पगुच्छ प्रदान करके उन्हें मोगा अंचल का कार्यभार सौंपा। इस अवसर पर क्षेत्र महाप्रबंधक चंडीगढ़ श्री चमन लाल शींहमार, महाप्रबंधक श्री राजेन्द्र कुमार रैगर तथा अन्य उच्चाधिकारी उपस्थित रहे। उल्लेखनीय है कि हमारा बैंक पहले से ही मोगा में अग्रणी जिला बैंक का दायित्व भी निभा रहा है।

विकसित भारत @2047 के निर्माण में बैंकों की भूमिका

गरिमा

भारत 15 अगस्त, 2047 को अपनी स्वतंत्रता के 100 वर्ष पूर्ण करेगा। यह अवसर केवल एक ऐतिहासिक पड़ाव नहीं होगा, बल्कि आत्ममंथन, आत्म-निर्माण और राष्ट्र के भविष्य की दिशा तय करने का भी समय होगा। स्वतंत्रता के सौ वर्षों के बाद भारत को एक ऐसे राष्ट्र के रूप में देखा जाना चाहिए जो आर्थिक, सामाजिक, तकनीकी और मानवीय दृष्टि से पूर्ण रूप से विकसित हो। विकसित भारत @2047 का सपना तभी साकार हो सकता है जब देश के सभी क्षेत्र, संस्थान और नागरिक मिलकर साझा जिम्मेदारी निभाएं। इस सामूहिक प्रयास में बैंकिंग क्षेत्र की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण, निर्णायक और आधारभूत है।

विकसित भारत @2047 की परिकल्पना एक ऐसे भारत की है जहाँ हर नागरिक को सम्मानजनक रोजगार, गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, सुलभ स्वास्थ्य सेवाएं, सुरक्षित आवास और जीवन की सभी मूलभूत सुविधाएं उपलब्ध हों। एक ऐसा भारत जहाँ आर्थिक असमानता न्यूनतम हो, अवसर सबके लिए समान हों और देश, वैश्विक अर्थव्यवस्था में एक मजबूत व भरोसेमंद शक्ति के रूप में स्थापित हो। इस लक्ष्य की प्राप्ति में बैंकों की भूमिका केवल धन के लेनदेन तक सीमित नहीं है, बल्कि वे देश के आर्थिक विकास के वाहक, मार्गदर्शक और संरक्षक के रूप में कार्य करते हैं।

एक नव-नियुक्त बैंक कर्मी के रूप में, अपने सेवा जीवन के प्रारंभिक दिनों में ही मुझे यह अनुभव हुआ कि बैंकिंग केवल खातों, चेक, पास बुक और ऋण तक सीमित नहीं है। बैंक वास्तव में देश की आर्थिक धड़कन हैं। वे न केवल पूंजी के प्रवाह को सुनिश्चित करते हैं बल्कि आम नागरिक के सपनों को साकार करने का माध्यम भी बनते

हैं। एक छोटा सा ऋण किसी के लिए स्वरोजगार की शुरुआत हो सकता है तो किसी के लिए बच्चों की उच्च शिक्षा का आधार बन जाता है। इस प्रकार बैंक आम जनजीवन से सीधे जुड़े हुए हैं। आज जब भारत, विकसित भारत @2047 की दिशा में तेज़ी से आगे बढ़ रहा है, तब बैंकिंग की भूमिका पहले से कहीं अधिक व्यापक, जटिल और उत्तरदायित्व पूर्ण हो गई है। बदलते समय के साथ बैंकों को तकनीकी रूप से सशक्त, सामाजिक रूप से संवेदनशील और आर्थिक रूप से उत्तरदायी बनना होगा। पारंपरिक बैंकिंग से आगे बढ़कर अब बैंकों को विकास का सहभागी बनना होगा।

विकसित भारत की सबसे पहली और सबसे महत्वपूर्ण आवश्यकता **वित्तीय समावेशन** है। एक विकसित राष्ट्र वही होता है जहाँ हर

नागरिक का बैंकिंग सेवाओं तक समान पहुँच हो, चाहे वह शहर में रहता हो या किसी दूरदराज के गांव में। प्रधानमंत्री जन धन योजना ने इस दिशा में ऐतिहासिक कार्य किया है। करोड़ों लोगों को पहली बार बैंकिंग प्रणाली से जोड़ा गया। जब मैंने बैंक में पहली बार एक बुजुर्ग महिला का जन धन खाता खोला, तो उन्होंने भावुक होकर कहा— "**अब पैसा घर में रखने का डर नहीं है।**" यह वाक्य मेरे लिए बैंकिंग की असली ताकत को दर्शाता है। वित्तीय समावेशन केवल खाता खोलना नहीं, बल्कि सुरक्षा, आत्मविश्वास और सम्मान की भावना प्रदान करना है।

डिजिटल बैंकिंग ने वित्तीय समावेशन को और अधिक गति दी है। मोबाइल बैंकिंग, यूपीआई, इंटरनेट बैंकिंग और आधार आधारित भुगतान प्रणालियों ने लेन-देन को सरल, तेज़ और पारदर्शी बनाया है। आज एक किसान, दिहाड़ी मजदूर या छोटा दुकानदार भी डिजिटल भुगतान कर पा रहा है। बैंकों का दायित्व है कि वे डिजिटल प्लेटफॉर्म को सरल और सुरक्षित बनाएं, साइबर सुरक्षा सुनिश्चित करें तथा ग्राहकों को डिजिटल साक्षर बनाएं। वर्ष 2047 तक लक्ष्य होना चाहिए कि हर नागरिक का बैंक खाता हो, हर लेन-देन डिजिटल हो और भ्रष्टाचार तथा काले धन पर प्रभावी नियंत्रण हो।

भारत की अर्थव्यवस्था की रीढ़ **कृषि क्षेत्र** है। विकसित भारत की कल्पना तब तक अधूरी है जब तक हमारा किसान सशक्त, आत्मनिर्भर और सुरक्षित नहीं बनता। बैंकों की भूमिका यहां अत्यंत महत्वपूर्ण है। समय पर कृषि ऋण, किसान क्रेडिट कार्ड, फसल बीमा और मौसम आधारित बीमा योजनाओं के माध्यम से बैंक, किसानों को जोखिम से सुरक्षा प्रदान करते हैं। जब किसान को समय पर वित्तीय सहायता मिलती है तो वह आधुनिक तकनीक, उन्नत बीज और बेहतर संसाधनों का उपयोग कर सकता है। इससे उत्पादन बढ़ता है और किसानों की आय में भी वृद्धि होती है। देश के **युवा वर्ग** को सशक्त बनाना विकसित भारत की दिशा में एक और महत्वपूर्ण कदम है। भारत विश्व का सबसे युवा देश है। युवाओं के पास विचार, ऊर्जा और नवाचार की अपार क्षमता है लेकिन पूंजी की कमी उनके सपनों के रास्ते में बाधा बन जाती है। ऐसे में बैंक युवाओं के सपनों को पंख देने का कार्य करते हैं। मुद्रा योजना, स्टार्टअप इंडिया और स्टैंड-अप इंडिया जैसी योजनाओं के माध्यम से बैंक उद्यमिता को बढ़ावा दे रहे हैं। एक सफल स्टार्टअप न केवल स्वयं रोजगार देता है बल्कि अनेक लोगों के लिए रोजगार के अवसर भी उत्पन्न करता है।

विकसित भारत केवल आर्थिक रूप से ही नहीं, बल्कि **पर्यावरणीय रूप से** भी संतुलित होना चाहिए। वर्तमान समय में सतत विकास अत्यंत आवश्यक है। बैंक, ग्रीन बैंकिंग को बढ़ावा देकर इस दिशा में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। सौर ऊर्जा, पवन ऊर्जा, इलेक्ट्रिक वाहन, जल संरक्षण और पर्यावरण अनुकूल परियोजनाओं को वित्तीय सहायता प्रदान कर बैंक पर्यावरण संरक्षण में योगदान दे रहे हैं। इससे एक ओर प्रकृति की रक्षा होती है, वहीं दूसरी ओर हरित रोजगार के नए अवसर भी सृजित होते हैं। विकसित भारत के लिए **मजबूत बुनियादी ढांचा** अनिवार्य है। सड़कें, रेलवे, मेट्रो, हवाई अड्डे, बिजली, जल आपूर्ति, स्वास्थ्य और शिक्षा संस्थान इत्यादि के निर्माण और विस्तार में बैंकों की वित्तीय भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है। बड़े इंफ्रास्ट्रक्चर प्रोजेक्ट्स के लिए ऋण उपलब्ध कराना, बॉन्ड के माध्यम से निवेश जुटाना और निजी क्षेत्र की भागीदारी को प्रोत्साहित करना बैंकों की प्रमुख जिम्मेदारी है। मजबूत बुनियादी ढांचा ही देश को वैश्विक प्रतिस्पर्धा में आगे ले जा सकता है।

एक विकसित राष्ट्र की पहचान यह भी होती है कि वहाँ **समान अवसर** उपलब्ध हों। बैंकों ने महिलाओं, अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति और पिछड़े वर्गों के लिए विशेष ऋण योजनाएं शुरू की हैं। महिला उद्यमिता को बढ़ावा देकर बैंक न केवल आर्थिक विकास में योगदान दे रहे हैं, बल्कि सामाजिक सशक्तिकरण को भी मजबूती प्रदान कर रहे हैं। वर्ष 2047 तक भारत को सशक्त और आत्मनिर्भर बनाने के लिए **वित्तीय साक्षरता** अत्यंत आवश्यक है। केवल बैंक खाते होना पर्याप्त नहीं है, बल्कि लोगों को यह समझना भी जरूरी है कि पैसे का सही प्रबंधन कैसे किया जाए। बैंकों द्वारा चलाए जा रहे वित्तीय साक्षरता अभियान, स्कूलों और कॉलेजों में वित्तीय शिक्षा तथा ग्रामीण क्षेत्रों में जागरूकता कार्यक्रम एक मजबूत आर्थिक समाज की नींव रखते हैं। अंततः यह कहा जा सकता है कि बैंकों की भूमिका केवल आर्थिक नहीं, बल्कि सामाजिक और राष्ट्रीय विकास से भी गहराई से जुड़ी हुई है। विकसित भारत @2047 का सपना तभी साकार हो सकता है जब देश की बैंकिंग प्रणाली सशक्त, समावेशी, पारदर्शी और उत्तरदायी हो। निस्संदेह यह कहा जा सकता है कि **'यदि भारत को विकसित बनाना है, तो बैंकों को विकास का इंजन बनाना होगा।'**

- ग्राहक सेवा प्रतिनिधि
इंदरलोक शाखा, दिल्ली

हिंदी कार्यशाला

आंचलिक कार्यालय आगरा

आंचलिक कार्यालय बरेली

आंचलिक कार्यालय फरीदकोट

आंचलिक कार्यालय पंचकूला

आंचलिक कार्यालय होशियारपुर

स्टाफ प्रशिक्षण महाविद्यालय, रोहिणी

हिंदी कार्यशाला

आंचलिक कार्यालय भोपाल

आंचलिक कार्यालय अमृतसर

आंचलिक कार्यालय दिल्ली-2

आंचलिक कार्यालय देहरादून

आंचलिक कार्यालय लुधियाना

सहभागी

बैंकिंग उद्योग में कृत्रिम बुद्धिमत्ता

नमन सिंगला

आज के आधुनिक डिजिटल युग में तकनीकी विकास ने मानव जीवन के लगभग हर क्षेत्र को गहराई से प्रभावित किया है। चाहे वह शिक्षा हो, स्वास्थ्य सेवाएं हों, व्यापार हो या संचार, हर क्षेत्र में नई तकनीकों ने कार्य करने के तरीकों को पूरी तरह बदल दिया है। इसी प्रकार बैंकिंग उद्योग भी इस परिवर्तन से अछूता नहीं रहा है। विशेष रूप से कृत्रिम बुद्धिमत्ता (Artificial Intelligence) ने बैंकिंग सेवाओं को अधिक तेज, सुरक्षित, सटीक और ग्राहक-केंद्रित बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता एक ऐसी उन्नत तकनीक है जो मशीनों और कंप्यूटर सिस्टम को इस प्रकार विकसित करती है कि वे मानव बुद्धि की तरह सोच सकें, सीख सकें, समस्याओं का समाधान कर सकें और निर्णय ले सकें। बैंकिंग क्षेत्र में एआई का उपयोग तेजी से बढ़ रहा है और यह आने वाले समय में इस उद्योग की कार्य-प्रणाली को पूरी तरह बदलने की क्षमता रखता है। इस विस्तृत लेख में हम समझेंगे कि बैंकिंग उद्योग में एआई का उपयोग किस प्रकार हो रहा है, इसके क्या लाभ हैं, इसमें किन चुनौतियों का सामना करना पड़ता है और भविष्य में इसकी क्या संभावनाएं हैं।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता, कंप्यूटर विज्ञान की एक महत्वपूर्ण शाखा है जिसका उद्देश्य मशीनों को इस योग्य बनाना है कि वे मानव जैसी बुद्धिमत्ता प्रदर्शित कर सकें। एआई के अंतर्गत कई उप-तकनीकों का उपयोग किया जाता है, जैसे मशीन लर्निंग, डीप लर्निंग और प्राकृतिक भाषा प्रसंस्करण। मशीन लर्निंग के माध्यम से कंप्यूटर सिस्टम बड़े डेटा सेट का विश्लेषण करते हैं और उनसे पैटर्न सीखते हैं। डीप लर्निंग इस प्रक्रिया को और अधिक उन्नत बनाता है जिससे मशीनें जटिल समस्याओं को भी समझ सकती हैं। प्राकृतिक भाषा प्रसंस्करण की सहायता से कंप्यूटर, मानव भाषा को समझने और प्रतिक्रिया देने में सक्षम हो जाते हैं। बैंकिंग क्षेत्र में इन तकनीकों का उपयोग इसलिए अत्यंत महत्वपूर्ण है क्योंकि यहां प्रतिदिन लाखों ग्राहकों के लेन-देन, डेटा और वित्तीय गतिविधियों का प्रबंधन किया जाता है। एआई इन विशाल डेटा सेट का विश्लेषण करके सटीक और तेज निर्णय लेने में सहायता करता है।

बैंकिंग उद्योग में कृत्रिम बुद्धिमत्ता का महत्व : बैंकिंग क्षेत्र में एआई का महत्व दिन-प्रतिदिन बढ़ता जा रहा है। यह पारंपरिक बैंकिंग प्रणाली को डिजिटल और स्मार्ट प्रणाली में परिवर्तित कर रहा है। इसके महत्व को विस्तार से समझा जा सकता है। सबसे पहले एआई ने बैंकिंग सेवाओं की गति और दक्षता में उल्लेखनीय वृद्धि की है। पहले जिन कार्यों में घंटों या दिनों का समय लगता था, अब वे कुछ ही सेकंड में पूरे हो जाते हैं। इससे ग्राहकों को तुरंत सेवा मिलती है। दूसरे, एआई ने ग्राहक अनुभव को बेहतर बनाया है। आज के ग्राहक तेज, सरल और व्यक्तिगत सेवाएं चाहते हैं। एआई,

ग्राहकों के व्यवहार और जरूरतों को समझकर उन्हें अनुकूल सेवाएं प्रदान करता है। तीसरे, धोखाधड़ी की रोकथाम में एआई अत्यंत प्रभावी साबित हुआ है। यह संदिग्ध गतिविधियों की पहचान करके तुरंत कार्रवाई करता है। इसके अतिरिक्त, एआई बैंकिंग संचालन की लागत को कम करता है क्योंकि कई कार्य स्वचालित हो जाते हैं। साथ ही, यह डेटा आधारित निर्णय लेने में मदद करता है जिससे गलतियों की संभावना कम हो जाती है। आज के प्रतिस्पर्धात्मक बाजार में वे बैंक ही सफल हो पाते हैं जो एआई जैसी आधुनिक तकनीकों को अपनाते हैं।

बैंकिंग में एआई के प्रमुख उपयोग

चैटबॉट्स और वर्चुअल असिस्टेंट : एआई आधारित चैटबॉट्स, बैंकिंग सेवाओं में एक क्रांतिकारी परिवर्तन लेकर आए हैं। ये चैटबॉट्स 24 घंटे और सप्ताह के सातों दिन ग्राहकों को सेवाएं प्रदान करते हैं। ग्राहक बिना बैंक जाए अपने सवालों के जवाब प्राप्त कर सकते हैं। उदाहरण के लिए, ग्राहक अपने खाते का बैलेंस जान सकते हैं, ट्रांजेक्शन की जानकारी प्राप्त कर सकते हैं या लोन से संबंधित प्रश्न पूछ सकते हैं। ये चैटबॉट्स प्राकृतिक भाषा को समझते हैं और मानव की तरह संवाद करते हैं जिससे ग्राहक को सहज अनुभव मिलता है।

धोखाधड़ी की पहचान : बैंकिंग क्षेत्र में धोखाधड़ी एक गंभीर समस्या है। एआई इस समस्या के समाधान में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। यह ग्राहकों के लेन-देन के पैटर्न का विश्लेषण करता है और किसी भी असामान्य गतिविधि को तुरंत पहचान लेता है। यदि किसी ग्राहक का कार्ड अचानक किसी अन्य देश में उपयोग किया जाता है या असामान्य राशि का लेन-देन होता है तो एआई तुरंत अलर्ट जारी कर सकता है या लेन-देन को रोक सकता है। इससे ग्राहकों के धन की सुरक्षा सुनिश्चित होती है।

क्रेडिट स्कोरिंग और लोन अप्रूवल : एआई का उपयोग ग्राहकों की क्रेडिट योग्यता का आकलन करने में भी किया जाता है। यह ग्राहक के वित्तीय इतिहास, आय, खर्च और अन्य डेटा का विश्लेषण करके यह निर्धारित करता है कि उसे लोन देना सुरक्षित है या नहीं। इससे लोन स्वीकृति की प्रक्रिया तेज और अधिक सटीक हो जाती है। साथ ही, बैंक के लिए जोखिम भी कम हो जाता है।

व्यक्तिगत बैंकिंग सेवाएं : एआई, ग्राहकों के व्यवहार, पसंद और वित्तीय गतिविधियों का विश्लेषण करके उन्हें व्यक्तिगत सेवाएं प्रदान करता है। उदाहरण के लिए यह ग्राहकों को निवेश के सुझाव दे सकता है, उनके खर्च का विश्लेषण कर सकता है और बचत के तरीके बता सकता है। इससे ग्राहक को ऐसा अनुभव मिलता है जैसे बैंक, उसकी व्यक्तिगत जरूरतों को समझता है।

जोखिम प्रबंधन : बैंकिंग में जोखिम प्रबंधन अत्यंत महत्वपूर्ण होता है। एआई, बाजार के रुझानों, आर्थिक परिस्थितियों और वित्तीय डेटा का विश्लेषण करके संभावित जोखिमों का पूर्वानुमान लगाता है। इससे बैंक समय रहते उचित निर्णय ले सकते हैं और संभावित नुकसान से बच सकते हैं।

ऑटोमेशन और बैक-ऑफिस कार्य : एआई ने कई दोहराए जाने वाले कार्यों को स्वचालित बना दिया है। जैसे डेटा एंट्री, दस्तावेज़ सत्यापन, रिपोर्ट तैयार करना आदि। इससे कर्मचारियों का समय बचता है और वे अधिक महत्वपूर्ण कार्यों पर ध्यान केंद्रित कर सकते हैं।

साइबर सुरक्षा : बैंकिंग क्षेत्र में डेटा की सुरक्षा अत्यंत महत्वपूर्ण होती है। एआई, साइबर हमलों की पहचान करता है और संदिग्ध गतिविधियों पर नजर रखता है। यह सुरक्षा प्रणाली को मजबूत बनाता है और ग्राहकों की जानकारी को सुरक्षित रखता है।

बैंकिंग में एआई के लाभ : कृत्रिम बुद्धिमत्ता ने बैंकिंग उद्योग को आधुनिक, तेज और अधिक प्रभावी बना दिया है। इसके उपयोग से न केवल बैंकिंग सेवाओं की गुणवत्ता में सुधार हुआ है, बल्कि ग्राहकों के अनुभव में भी महत्वपूर्ण परिवर्तन आया है। एआई के लाभों को विस्तार से समझना आवश्यक है क्योंकि यही वे कारण हैं जिनकी वजह से बैंक तेजी से इस तकनीक को अपना रहे हैं

बेहतर ग्राहक अनुभव : एआई का सबसे बड़ा लाभ यह है कि यह ग्राहकों को तेज, सटीक और व्यक्तिगत सेवाएं प्रदान करता है। पहले ग्राहक को बैंक से जुड़ी किसी भी जानकारी के लिए शाखा में जाना पड़ता था या लंबे समय तक कॉल पर इंतजार करना पड़ता था लेकिन अब एआई आधारित चैटबॉट्स और वर्चुअल असिस्टेंट 24×7 उपलब्ध रहते हैं जो तुरंत ग्राहकों के सवालों का जवाब देते हैं। उदाहरण के लिए ग्राहक अपने खाते का बैलेंस तुरंत जान सकता है, लेन-देन की जानकारी तुरंत मिल जाती है या किसी समस्या का

समाधान तुरंत हो जाता है। इसके अलावा, एआई ग्राहकों की पसंद और व्यवहार को समझकर उन्हें व्यक्तिगत सेवाएं भी प्रदान करता है, जैसे निवेश के सुझाव, खर्च को नियंत्रित करने के सुझाव और बचत के तरीके। इससे ग्राहक को यह अनुभव होता है कि बैंक उसकी जरूरतों को समझता है, जिससे संतुष्टि और विश्वास दोनों बढ़ते हैं।

लागत में कमी : एआई के उपयोग से बैंक अपनी संचालन लागत को काफी हद तक कम कर सकते हैं। कई ऐसे कार्य जो पहले कर्मचारियों द्वारा किए जाते थे, अब एआई द्वारा स्वचालित गए हैं। जैसे डेटा एंट्री, दस्तावेज़ों की जांच, ग्राहक के सामान्य प्रश्नों का उत्तर देना इत्यादि। इन कार्यों के लिए अब कम कर्मचारियों की आवश्यकता होती है जिससे वेतन और अन्य खर्च कम हो जाते हैं। इसके अलावा, एआई सिस्टम कम समय में अधिक काम कर सकते हैं, इसमें गलतियों की संभावना कम होती है और कार्य की गुणवत्ता बेहतर होती है। इस प्रकार, बैंक कम लागत में अधिक दक्षता के साथ काम कर सकते हैं।

निर्णय लेने में सुधार : एआई, डेटा आधारित निर्णय लेने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। बैंकिंग क्षेत्र में हर निर्णय चाहे वह लोन देना हो या निवेश करना बहुत महत्वपूर्ण होता है। एआई, बड़े डेटा का विश्लेषण करता है, ग्राहकों के व्यवहार को समझता है, जोखिम का आकलन करता है जिसके आधार पर बैंक को सही और सटीक निर्णय लेने में यह मदद करता है। उदाहरण के लिए कौन सा ग्राहक लोन वापस कर पाएगा, किस ग्राहक में जोखिम अधिक है और कौन सा निवेश लाभदायक होगा। एआई, पारंपरिक तरीकों की तुलना में अधिक सटीक और तेज निर्णय प्रदान करता है जिससे बैंक का जोखिम कम होता है और लाभ बढ़ता है।

समय की बचत : एआई के उपयोग से बैंकिंग कार्य बहुत तेजी से पूरे होते हैं, जिससे समय की काफी बचत होती है। पहले लोन अप्रूवल में कई दिन लगते थे, दस्तावेज़ सत्यापन में समय लगता था, ट्रांजेक्शन प्रोसेसिंग धीमी होती थी लेकिन अब एआई, कुछ ही मिनटों में लोन का निर्णय ले सकता है, तुरंत दस्तावेज़ों की जांच कर सकता है, रियल-टाइम ट्रांजेक्शन प्रोसेस कर सकता है। इससे न केवल बैंक का समय बचता है, बल्कि ग्राहक को भी तुरंत सेवा मिलती है।

धोखाधड़ी की रोकथाम : एआई, बैंकिंग में सुरक्षा को मजबूत बनाने में बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। यह ग्राहकों के लेन-देन के पैटर्न का विश्लेषण करता है और किसी भी असामान्य गतिविधि को तुरंत पहचान लेता है। उदाहरण के लिए अचानक बड़ी राशि का लेन-देन, किसी दूसरे देश से कार्ड का उपयोग, असामान्य समय पर ट्रांजेक्शन इत्यादि। ऐसी स्थिति में एआई तुरंत अलर्ट जारी करता है, ट्रांजेक्शन को रोक सकता है, खाते को अस्थायी रूप से ब्लॉक कर सकता है। इससे ग्राहकों के पैसे की सुरक्षा बढ़ती है और बैंक पर भरोसा मजबूत होता है।

कार्यों का स्वचालन : एआई, कई दोहराए जाने वाले कार्यों को स्वचालित कर देता है, जिससे कार्य तेजी और सटीकता से पूरे होते हैं। जैसे रिपोर्ट तैयार करना, ग्राहक डेटा अपडेट करना, केवाईसी प्रक्रिया। इससे कर्मचारियों का समय बचता है और वे अधिक महत्वपूर्ण और रचनात्मक कार्यों पर ध्यान दे सकते हैं।

प्रतिस्पर्धात्मक लाभ : आज के समय में बैंकिंग उद्योग में प्रतिस्पर्धा बहुत अधिक है। हर बैंक अपने ग्राहकों को बेहतर सेवाएं देना चाहता है। एआई का उपयोग करने वाले बैंक तेज और बेहतर सेवाएं प्रदान करते हैं, ग्राहकों को व्यक्तिगत अनुभव देते हैं और सुरक्षा को मजबूत बनाते हैं। इससे वे अन्य बैंकों की तुलना में आगे रहते हैं।

जोखिम प्रबंधन में सुधार : एआई, बैंक को विभिन्न प्रकार के जोखिमों को समझने और उन्हें नियंत्रित करने में मदद करता है। यह बाजार के रुझानों का विश्लेषण करता है, आर्थिक बदलावों का पूर्वानुमान लगाता है, संभावित नुकसान की पहचान करता है। इस प्रकार बैंक समय रहते सही कदम उठा सकते हैं और बड़े नुकसान से बच सकते हैं।

बैंकिंग में एआई की चुनौतियां – हालांकि, कृत्रिम बुद्धिमत्ता बैंकिंग उद्योग के लिए अत्यंत लाभकारी सिद्ध हो रही है लेकिन इसके साथ कई गंभीर चुनौतियां भी जुड़ी हुई हैं। इन चुनौतियों को समझना और उनका समाधान करना आवश्यक है, ताकि एआई का उपयोग सुरक्षित और प्रभावी तरीके से किया जा सके।

डेटा गोपनीयता और सुरक्षा : बैंकिंग क्षेत्र में सबसे महत्वपूर्ण चीज होती है ग्राहकों का डेटा। इसमें ग्राहकों की व्यक्तिगत जानकारी, बैंक खाते की जानकारी, लेन-देन का विवरण, आधार और पैन जैसी संवेदनशील सूचनाएं शामिल होती हैं। एआई, सिस्टम इन डेटा

का विश्लेषण करके काम करता है इसलिए बड़ी मात्रा में डेटा को संग्रहित और प्रोसेस किया जाता है। इससे डेटा लीक या साइबर हमलों का खतरा बढ़ जाता है। यदि किसी कारणवश यह डेटा गलत हाथों में चला जाए तो इसका दुरुपयोग हो सकता है, जैसे पहचान की चोरी, वित्तीय धोखाधड़ी, अनधिकृत लेन-देन इसलिए बैंकों को अत्यधिक मजबूत सुरक्षा प्रणाली, एन्क्रिप्शन तकनीक और डेटा सुरक्षा नियमों का पालन करना आवश्यक है।

उच्च लागत : एआई तकनीक को लागू करना सस्ता नहीं होता। इसके लिए बैंकों को कई प्रकार के खर्च उठाने पड़ते हैं, जैसे उन्नत सॉफ्टवेयर और हार्डवेयर खरीदना, डेटा स्टोरेज सिस्टम बनाना, विशेषज्ञ कर्मचारियों (एआई इंजीनियर, डेटा साइंटिस्ट) की नियुक्ति, सिस्टम का रख-रखाव और अपडेट। विशेष रूप से छोटे और मध्यम स्तर के बैंकों के लिए यह लागत एक बड़ी चुनौती बन जाती है इसलिए सभी बैंक एक ही गति से एआई को अपनाने में सक्षम नहीं होते।

तकनीकी जटिलता : एआई एक अत्यंत जटिल तकनीक है। इसे समझना, विकसित करना और सही तरीके से लागू करना आसान नहीं है। एआई मॉडल को ट्रेन करने के लिए बड़े और सही डेटा की आवश्यकता होती है, एल्गोरिद्म का सही चयन जरूरी होता है, लगातार मॉनिटरिंग और सुधार करना पड़ता है। यदि एआई सिस्टम सही तरीके से प्रशिक्षित नहीं है तो यह गलत निर्णय भी ले सकता है जो बैंक और ग्राहक दोनों के लिए नुकसानदायक हो सकता है।

रोजगार पर प्रभाव : एआई और ऑटोमेशन के कारण कई पारंपरिक नौकरियां प्रभावित हो रही हैं। विशेष रूप से वे कार्य जो बार-बार दोहराए जाते हैं, जैसे डेटा एंट्री, ग्राहक सेवा के सामान्य प्रश्न, दस्तावेज़ सत्यापन। अब ये कार्य मशीनें तेजी से और कम लागत में कर सकती हैं। इससे कुछ कर्मचारियों की नौकरियां कम हो सकती हैं। हालांकि, दूसरी ओर नई नौकरियां भी उत्पन्न होती हैं, जैसे एआई विशेषज्ञ, डेटा विश्लेषक, साइबर सुरक्षा विशेषज्ञ इत्यादि इसलिए आवश्यकता है कि कर्मचारियों को नई तकनीकों के अनुसार प्रशिक्षित किया जाए।

नैतिक मुद्दे : एआई के उपयोग से जुड़े नैतिक प्रश्न भी महत्वपूर्ण हैं। उदाहरण के लिए क्या एआई के निर्णय निष्पक्ष होते हैं? क्या एआई में पक्षपात हो सकता है? क्या ग्राहकों को पता होता है कि उनके साथ एआई इंटरैक्ट कर रहा है? यदि एआई को गलत या पक्षपाती डेटा से प्रशिक्षित किया गया है तो यह कुछ ग्राहकों के साथ भेदभाव कर सकता है, जैसे लोन अप्रूवल में। इसलिए यह जरूरी है कि एआई सिस्टम पारदर्शी, निष्पक्ष और जिम्मेदार हो।

निर्भरता और नियंत्रण : जैसे-जैसे बैंक, एआई पर अधिक निर्भर होते जा रहे हैं, वैसे-वैसे तकनीकी विफलता का जोखिम भी बढ़ रहा है। यदि किसी कारण सर्वर डाउन हो जाए, सिस्टम में बग आ जाए तो एआई गलत निर्णय ले सकता है, इससे पूरी बैंकिंग सेवा प्रभावित हो सकती है इसलिए मानव निगरानी अभी भी आवश्यक है।

भारत में भी बैंकिंग क्षेत्र तेजी से डिजिटल हो रहा है और इसमें एआई का उपयोग बढ़ रहा है। कई प्रमुख बैंक, एआई आधारित चैटबॉट्स का उपयोग कर रहे हैं, डिजिटल भुगतान को बढ़ावा दे रहे हैं और ग्राहक सेवाओं में सुधार कर रहे हैं। सरकार भी डिजिटल इंडिया जैसे अभियानों के माध्यम से एआई और डिजिटल तकनीकों को प्रोत्साहित कर रही है। इससे बैंकिंग सेवाएं अधिक सुलभ और प्रभावी बन रही हैं। भविष्य में एआई बैंकिंग उद्योग को और अधिक उन्नत बनाएगा। आने वाले समय में पूरी तरह डिजिटल बैंकिंग प्रणाली विकसित हो सकती है जिसमें मानव हस्तक्षेप बहुत कम होगा। लेन-देन और अधिक सुरक्षित और तेज होंगे। निवेश के लिए स्मार्ट सिस्टम विकसित होंगे जो ग्राहकों को सर्वोत्तम विकल्प प्रदान करेंगे। एआई, बैंकिंग को अधिक बुद्धिमान, स्वचालित और ग्राहक-केंद्रित बना देगा।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता ने बैंकिंग उद्योग में एक नई क्रांति की शुरुआत की है। इसने न केवल बैंकिंग सेवाओं को तेज और सुरक्षित बनाया है बल्कि ग्राहकों के अनुभव को भी बेहतर किया है। हालांकि इसके साथ कुछ चुनौतियां भी जुड़ी हुई हैं लेकिन सही रणनीति और तकनीकी विकास के माध्यम से इन चुनौतियों को दूर किया जा सकता है। भविष्य में एआई, बैंकिंग का अभिन्न हिस्सा बन जाएगा। जो बैंक इस तकनीक को अपनाएंगे, वही प्रतिस्पर्धा में आगे रहेंगे। इसलिए यह कहना पूरी तरह उचित है कि कृत्रिम बुद्धिमत्ता, बैंकिंग उद्योग का वर्तमान ही नहीं बल्कि भविष्य भी है।

-प्रबंधक
शाखा सुलारघरात, पंजाब

संसदीय राजभाषा समिति का स्वर्ण नगरी दौरा

मार्च, 2026 माह में अपने स्वर्ण नगरी अमृतसर दौरे के दौरान संसदीय राजभाषा समिति की तीसरी उप समिति ने 06 मार्च, 2026 को बैंक के आंचलिक कार्यालय अमृतसर का राजभाषा संबंधी निरीक्षण किया। इस निरीक्षण कार्यक्रम में समिति की ओर से माननीय सदस्य श्री श्रीरंग आप्पा बारणे, श्री नीरज डाँगी, श्री सतीश कुमार गौतम, श्रीमती संगीता यादव और डॉ. धर्मशीला गुप्ता की गरिमामयी उपस्थिति रही।

वित्तीय सेवाएं विभाग, वित्त मंत्रालय की ओर से उप सचिव श्री धीरज भास्कर, उप निदेशक (राजभाषा) श्री धर्मबीर तथा बैंक की ओर से महाप्रबंधक सह मुख्य राजभाषा अधिकारी श्री गजराज देवी सिंह ठाकुर, आंचलिक प्रबंधक अमृतसर श्री गुरमीत सिंह, मुख्य प्रबंधक (राजभाषा) श्री निखिल शर्मा, मुख्य प्रबंधक (राजभाषा) सुश्री हरप्रीत कौर और आंचलिक कार्यालय अमृतसर में पदस्थ वरिष्ठ प्रबंधक श्री अनिल जमानिया ने सहभागिता की।

संसदीय राजभाषा समिति का स्वर्ण नगरी दौरा

इस सुअवसर पर माननीय सदस्यों के कर कमलों से बैंक की हिंदी तिमाही पत्रिका 'राजभाषा अंकुर' के दिसंबर, 2025 अंक का विमोचन किया गया।

बैंक कार्मिकों का मानसिक स्वास्थ्य
(एक व्यापक विश्लेषण, प्रभाव, अनुभव और समाधान)

सपना द्विवेदी

"मनुष्य का मन ही उसके बंधन और मुक्ति का कारण है।"
— स्वामी विवेकानंद

आज के प्रतिस्पर्धी और परिणाम-उन्मुख कारोबारी परिवेश में मानसिक स्वास्थ्य को अब केवल व्यक्तिगत विषय के रूप में नहीं देखा जा सकता। यह सीधे तौर पर संगठन की उत्पादकता, कार्य-निष्पादन, जोखिम प्रबंधन और दीर्घकालिक स्थिरता से जुड़ा हुआ है। बैंकिंग क्षेत्र, जो किसी भी अर्थव्यवस्था की रीढ़ माना जाता है, इस संदर्भ में विशेष रूप से संवेदनशील है। बैंक कार्मिकों से सटीकता, निरंतर प्रदर्शन, उच्च नैतिक मानकों और ग्राहक-केंद्रित सेवा की अपेक्षा की जाती है। ऐसे में मानसिक स्वास्थ्य से जुड़े मुद्दे यदि अनदेखे रह जाएं तो उनका प्रभाव केवल व्यक्ति तक सीमित न रहकर पूरे संगठन पर पड़ता है। मानसिक स्वास्थ्य पर खुली और संरचित चर्चा अभी भी बैंकिंग संगठनों में सीमित है। इसका प्रमुख कारण मानसिक स्वास्थ्य से जुड़ा कलंक (Stigma) है जो कर्मचारियों को अपनी मानसिक चुनौतियों को स्वीकार करने और सहायता लेने से रोकता है।

कॉरपोरेट बैंकिंग संस्कृति में अक्सर यह धारणा प्रचलित रहती है कि एक प्रभावी कार्मिक वह है जो दबाव में भी बिना शिकायत किए प्रदर्शन करता रहे। इस सोच के कारण मानसिक तनाव, चिंता या भावनात्मक थकान को पेशेवर कमजोरी के रूप में देखा जाता है। परिणामस्वरूप, कर्मचारी यह मान लेते हैं कि मानसिक स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं को उजागर करने से उनकी पेशेवर विश्वसनीयता, कार्य-निष्पादन मूल्यांकन, पदोन्नति या नेतृत्व अवसरों पर नकारात्मक प्रभाव पड़ सकता है। यह भय मानसिक स्वास्थ्य कलंक को और

मजबूत करता है। कॉरपोरेट दृष्टिकोण से देखा जाए तो मानसिक स्वास्थ्य से जुड़ा कलंक एक रणनीतिक जोखिम है। जब कर्मचारी मानसिक दबाव के बावजूद सहायता नहीं लेते तो वे थकावट, निर्णय-क्षमता में कमी और भावनात्मक असंतुलन का सामना करते हैं। इससे उत्पादकता में गिरावट, अनुपस्थिति, कर्मचारी पलायन और ग्राहक सेवा की गुणवत्ता पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। बैंकिंग जैसे क्षेत्र में जहाँ निर्णयों की गुणवत्ता और समयबद्धता अत्यंत महत्वपूर्ण होती है, मानसिक स्वास्थ्य की अनदेखी व्यावसायिक जोखिम को बढ़ा सकती है। इसलिए मानसिक स्वास्थ्य कलंक को समझना और उसे कम करना किसी भी आधुनिक बैंकिंग संगठन के लिए एक आवश्यक प्रबंधन प्राथमिकता बन चुका है।

यह लेख बैंकिंग क्षेत्र में मानसिक स्वास्थ्य से जुड़े कलंक की प्रकृति, उसके संगठनात्मक और मानवीय प्रभाव तथा उससे निपटने की

आवश्यकता पर केंद्रित है। इसका उद्देश्य यह स्पष्ट करना है कि मानसिक स्वास्थ्य को केवल एक मानव संसाधन का मुद्दा नहीं है, बल्कि इसे एक कॉरपोरेट और नेतृत्व से जुड़ा विषय माना जाना चाहिए। एक ऐसी कार्य-संस्कृति का निर्माण जहां कर्मचारी मानसिक रूप से सुरक्षित महसूस करें, न केवल नैतिक दायित्व है बल्कि दीर्घकालिक व्यावसायिक सफलता की भी कुंजी है। अंततः मानसिक स्वास्थ्य कलंक को कम करना बैंकिंग संगठनों को अधिक सक्षम, जिम्मेदार और टिकाऊ बनाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। मानसिक रूप से स्वस्थ कर्मचारी ही बेहतर निर्णय लेते हैं, उच्च गुणवत्ता की सेवा प्रदान करते हैं और संगठन के प्रति दीर्घकालिक प्रतिबद्धता दिखाते हैं। इसी दृष्टिकोण के साथ यह लेख बैंकिंग क्षेत्र में मानसिक स्वास्थ्य कलंक पर गहन चर्चा की आधारशिला रखता है।

मानसिक स्वास्थ्य आज के समय में केवल एक व्यक्तिगत विषय नहीं रहा, बल्कि यह सामाजिक, आर्थिक और संगठनात्मक विकास से गहराई से जुड़ा हुआ मुद्दा बन चुका है। किसी भी संगठन की सफलता उसके कर्मचारियों की मानसिक और भावनात्मक स्थिति पर निर्भर करती है। फिर भी अनेक कार्यस्थलों पर मानसिक स्वास्थ्य को लेकर चुप्पी, असहजता और नकारात्मक धारणाएं बनी हुई हैं। इसे ही मानसिक स्वास्थ्य से जुड़ा कलंक (Mental Health Stigma) कहा जाता है। बैंकिंग क्षेत्र इस समस्या का एक सशक्त उदाहरण है। बैंक कर्मचारी प्रतिदिन वित्तीय जिम्मेदारियों, ग्राहकों के दबाव, उच्च लक्ष्य, तकनीकी बदलाव और नियामकीय अपेक्षाओं के बीच काम करते हैं। इन परिस्थितियों में तनाव, चिंता, अवसाद और बर्नआउट जैसी समस्याएं स्वाभाविक हैं। इसके बावजूद, बैंक कर्मचारी अपनी मानसिक कठिनाइयों को व्यक्त करने से डरते हैं। उन्हें आशंका रहती है कि ऐसा करने से उनकी पेशेवर छवि, पदोन्नति, स्थानांतरण या नौकरी की सुरक्षा पर नकारात्मक प्रभाव पड़ेगा। इस लेख में हम आगे बैंक कार्मिकों में मानसिक स्वास्थ्य से जुड़े कलंक को सामाजिक, संगठनात्मक, मनोवैज्ञानिक और व्यावसायिक दृष्टिकोण से समझने का प्रयास करेंगे। साथ ही यह लेख शोध निष्कर्षों, प्रकरण अध्ययन और व्यवहारिक समाधानों के माध्यम से यह स्पष्ट करता है कि इस कलंक को कैसे कम किया जा सकता है?

बैंकिंग क्षेत्र की कार्य-संस्कृति और मानसिक दबाव

बैंकिंग कार्य की प्रकृति : बैंकिंग केवल धन के लेन-देन का कार्य

नहीं है। यह विश्वास, उत्तरदायित्व और जोखिम प्रबंधन का क्षेत्र है। बैंक कर्मचारी न केवल ग्राहकों के पैसे की सुरक्षा के लिए जिम्मेदार होते हैं बल्कि उन्हें संगठन की साख बनाए रखने का दबाव भी होता है। बैंकिंग कार्य में शामिल हैं:

- वित्तीय लेन-देन की सटीकता
- ऋण स्वीकृति और वसूली
- ग्राहक शिकायत समाधान
- नियामकीय अनुपालन
- बिक्री और लक्ष्य पूर्ति

इन सभी कार्यों में त्रुटि की गुंजाइश बहुत कम होती है, जिससे कार्मिकों पर निरंतर मानसिक दबाव बना रहता है।

बैंक कार्मिकों पर मानसिक तनाव के प्रमुख कारण : कार्मिकों पर मानसिक तनाव के कुछ प्रमुख कारणों को निम्नानुसार वर्गीकृत किया जा सकता है -

लक्ष्य आधारित कार्य प्रणाली - निजी और सरकारी दोनों क्षेत्रों में बैंक कार्मिकों से अपेक्षा की जाती है कि वे तय समय में बिक्री, जमा, बीमा या ऋण लक्ष्य पूरे करें।

लंबा कार्य समय बैंकिंग कार्य अक्सर निर्धारित समय से अधिक चलता है, विशेषकर महीने या वित्तीय वर्ष के अंत में।

ग्राहक व्यवहार - असंतुष्ट, क्रोधित या आक्रामक ग्राहक मानसिक थकान को बढ़ाते हैं।

तकनीकी बदलाव - डिजिटल बैंकिंग, साइबर सुरक्षा और नई प्रणालियों के साथ तालमेल बिठाने का दबाव।

नौकरी की अनिश्चितता - निजीकरण, विलय और स्वचालन के कारण भविष्य को लेकर चिंता।

इन सभी कारणों से बैंक कर्मचारियों में मानसिक स्वास्थ्य समस्याओं की संभावना बढ़ जाती है।

मानसिक स्वास्थ्य कलंक : अवधारणा और स्वरूप

मानसिक स्वास्थ्य कलंक वह सामाजिक और संगठनात्मक दृष्टिकोण है जिसमें मानसिक समस्याओं को कमजोरी, अक्षमता या असफलता के रूप में देखा जाता है। मानसिक स्वास्थ्य कलंक के प्रकार इस प्रकार हैं –

- **सामाजिक कलंक :** समाज में यह धारणा कि मानसिक बीमारी, व्यक्ति की इच्छाशक्ति की कमी है या वह "सामान्य" नहीं है।
- **आत्म-कलंक :** जब व्यक्ति स्वयं ही यह मान लेता है कि उसकी मानसिक परेशानी उसे दूसरों से कमतर बनाती है।
- **संरचनात्मक कलंक :** जब संगठन की नीतियां, मूल्यांकन प्रणाली और कार्य-संस्कृति मानसिक स्वास्थ्य को महत्व नहीं देतीं।

बैंकिंग क्षेत्र में मानसिक स्वास्थ्य कलंक के कारण

- **पेशेवर "मजबूती" की अपेक्षा :** बैंकिंग क्षेत्र में यह अपेक्षा की जाती है कि कर्मचारी हर स्थिति में शांत, तर्कसंगत और भावनात्मक रूप से मजबूत रहें। भावनात्मक संघर्ष को कमजोरी माना जाता है।
- **करियर पर प्रभाव का डर :** कई बैंक कर्मचारियों को यह भय रहता है कि मानसिक स्वास्थ्य समस्या बताने से पदोन्नति रुक सकती है, गोपनीय रिपोर्ट में नकारात्मक टिप्पणी आ सकती है अथवा उन्हें महत्वपूर्ण कार्यों से वंचित किया जा सकता है।
- **प्रबंधन की सीमित संवेदनशीलता :** अनेक प्रबंधक मानसिक स्वास्थ्य के संकेतों को पहचान नहीं पाते या उन्हें "बहाना" समझ लेते हैं।

मानसिक स्वास्थ्य कलंक के व्यक्तिगत प्रभाव

1. **मानसिक और भावनात्मक प्रभाव**
   - चिंता और अवसाद में वृद्धि
   - आत्म-सम्मान में गिरावट
   - भावनात्मक अलगाव
2. **शारीरिक स्वास्थ्य पर प्रभाव**
   - सिरदर्द, उच्च रक्तचाप
   - नींद की कमी
   - थकान और कमजोरी

मानसिक स्वास्थ्य कलंक का संगठनात्मक स्तर पर प्रभाव

1. **उत्पादकता में गिरावट :** मानसिक तनाव से ग्रस्त कर्मचारी निर्णय लेने में चूक करते हैं और कार्य गुणवत्ता प्रभावित होती है।
2. **अनुपस्थिति और कर्मचारी पलायन**
   - बार-बार अवकाश
   - नौकरी छोड़ने की प्रवृत्ति
3. **कार्यस्थल संबंधों में तनाव:** अनदेखी मानसिक समस्याएं टीम में टकराव और अविश्वास को जन्म देती हैं।

प्रकरण अध्ययन

केस स्टडी 1: भारतीय बैंक में मानसिक स्वास्थ्य पहल

एक बड़े भारतीय बैंक ने शुरू किया:

- मानसिक स्वास्थ्य जागरूकता सप्ताह
- गोपनीय काउंसलिंग
- प्रबंधकों के लिए संवेदनशीलता प्रशिक्षण

परिणामस्वरूप, कर्मचारियों में सहायता लेने की प्रवृत्ति बढ़ी और कार्य संतुष्टि में सुधार हुआ।

केस स्टडी 2 : मानसिक स्वास्थ्य अवकाश का छिपा सच

एक राष्ट्रीय सर्वे में पाया गया कि बैंकिंग और वित्तीय क्षेत्र के अधिकांश कर्मचारी मानसिक स्वास्थ्य कारणों को शारीरिक बीमारी बताकर अवकाश लेते हैं।

केस स्टडी 3: अंतरराष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य

दक्षिण अमेरिका और एशिया के अध्ययनों से यह स्पष्ट हुआ कि उच्च कार्य दबाव और कम निर्णय स्वतंत्रता मानसिक विकारों की संभावना बढ़ाते हैं।

शोध आधारित समाधान : शोध बताते हैं कि मानसिक स्वास्थ्य कलंक को कम करने के लिए निरंतर जागरूकता, नेतृत्व की भागीदारीऔर बहु-स्तरीय सहायता प्रणाली आवश्यक है।

बैंकिंग संगठनों के लिए व्यावहारिक रणनीतियां

- **नेतृत्व की सक्रिय भूमिका :** जब वरिष्ठ अधिकारी मानसिक स्वास्थ्य पर खुलकर बात करते हैं, तो संगठन में भरोसा बनता है।
- **मानसिक स्वास्थ्य साक्षरता :** कर्मचारियों और प्रबंधकों को मानसिक स्वास्थ्य के संकेत पहचानना सिखाया जाना चाहिए।
- **गोपनीय सहायता तंत्र :** इसके अंतर्गत कर्मचारी सहायता कार्यक्रम और बाहरी काउंसलिंग सेवाएं ली जा सकती हैं।
- **नीति स्तर पर सुधार :** मानसिक स्वास्थ्य अवकाश, लचीले कार्य घंटे तथा यथार्थवादी लक्ष्य पर विचार किया जाना चाहिए।

मानसिक रूप से स्वस्थ कर्मचारी बेहतर निर्णय लेते हैं, ग्राहकों को बेहतर सेवा देते हैं तथा संगठन की प्रतिष्ठा बढ़ाते हैं। आने वाले समय में बैंकिंग क्षेत्र को तकनीकी बदलाव, बढ़ती प्रतिस्पर्धा और कर्मचारियों की बदलती अपेक्षाओं का सामना करना होगा। ऐसे में मानसिक स्वास्थ्य को प्राथमिकता देना अनिवार्य बन जाता है। बैंकिंग क्षेत्र में मानसिक स्वास्थ्य से जुड़ा कलंक एक गंभीर, लेकिन अक्सर अनदेखा किया जाने वाला संगठनात्मक मुद्दा है। यह केवल व्यक्तिगत स्तर पर कर्मचारियों के मानसिक और भावनात्मक कल्याण को प्रभावित नहीं करता बल्कि संगठन की कार्यक्षमता, निर्णय-गुणवत्ता और दीर्घकालिक स्थिरता पर भी प्रतिकूल प्रभाव डालता है। अत्यधिक कार्य-दबाव, लक्ष्य-आधारित मूल्यांकन और निरंतर प्रदर्शन की अपेक्षाएं बैंक कर्मचारियों को मानसिक तनाव के प्रति अधिक संवेदनशील बनाती हैं। इसके बावजूद, कलंक के कारण कार्मिक अपनी मानसिक चुनौतियों को स्वीकार करने या सहायता लेने से हिचकते हैं।

यह स्पष्ट है कि मानसिक स्वास्थ्य से जुड़ा कलंक बैंकिंग संगठनों के लिए एक रणनीतिक जोखिम के रूप में उभर रहा है। जब कर्मचारी चुपचाप तनाव, चिंता या भावनात्मक थकान के साथ काम करते हैं तो उत्पादकता में गिरावट, अनुपस्थिति, कार्यस्थल टकराव और कर्मचारी पलायन जैसी समस्याएं बढ़ती हैं। इससे न केवल कार्य-परिणाम प्रभावित होते हैं बल्कि संगठन की प्रतिष्ठा और ग्राहक अनुभव पर भी नकारात्मक असर पड़ता है। अतः मानसिक स्वास्थ्य को नज़रअंदाज़ करना अब किसी भी आधुनिक बैंक के लिए व्यावहारिक विकल्प नहीं रह गया है। मानसिक स्वास्थ्य कलंक को कम करने के लिए बैंकिंग संस्थानों को मानसिक कल्याण को अपनी व्यावसायिक रणनीति का अभिन्न हिस्सा बनाना होगा। नेतृत्व की स्पष्ट प्रतिबद्धता, प्रबंधकों की संवेदनशीलता, मानसिक स्वास्थ्य साक्षरता, गोपनीय सहायता प्रणालियां और सहायक नीतियां इस दिशा में प्रभावी कदम हो सकते हैं। सबसे महत्वपूर्ण यह है कि संगठन ऐसी कार्य-संस्कृति विकसित करें जहाँ मानसिक स्वास्थ्य पर खुलकर बात करना कमजोरी नहीं, बल्कि जिम्मेदारी और परिपक्वता का संकेत माना जाए। मानसिक स्वास्थ्य से जुड़े कलंक को समाप्त करना न केवल एक नैतिक आवश्यकता है, बल्कि बैंकिंग क्षेत्र की सतत सफलता और विश्वसनीयता के लिए एक अनिवार्य निवेश भी है।

बैंक कर्मचारियों में मानसिक स्वास्थ्य से जुड़ा कलंक केवल व्यक्तिगत नहीं, बल्कि संगठनात्मक और सामाजिक चुनौती है। यह एक बहु-आयामी समस्या है। जब तक बैंकिंग संस्थान मानसिक स्वास्थ्य को रणनीतिक प्राथमिकता नहीं बनाएंगे, तब तक यह संकट बना रहेगा। मानसिक स्वास्थ्य पर निवेश करना वास्तव में मानव पूंजी पर निवेश है। एक ऐसा निवेश जो कर्मचारियों के जीवन की गुणवत्ता, संगठन की उत्पादकता और समाज की आर्थिक स्थिरता तीनों को मजबूत करता है। मानसिक रूप से स्वस्थ कर्मचारी ही बेहतर निर्णय लेते हैं , ग्राहकों को बेहतर सेवा देते हैं और संगठन को दीर्घकालिक सफलता की ओर ले जाते हैं। मानसिक रूप से स्वस्थ कर्मचारी ही एक मजबूत, भरोसेमंद और नैतिक बैंकिंग व्यवस्था की नींव होते हैं। निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि "शरीर के घाव दिखते हैं, मन के घाव छुपे रह जाते हैं और यही सबसे बड़ा कलंक है, इसलिए मानसिक बीमारी कमजोरी नहीं, बल्कि वह संघर्ष है जिसे समझने की ज़रूरत है।"

-मनोवैज्ञानिक
पंजाब एण्ड सिंध बैंक
प्रधान कार्यालय नई दिल्ली

मेगा टाउन हॉल बैठक – दिल्ली

मेगा टाउन हॉल बैठक

दिल्ली - I अंचल

दिल्ली - II अंचल

नोएडा अंचल

गुरुग्राम अंचल

पंजाब एण्ड सिंध बैंक ने प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी श्री स्वरूप कुमार साहा की अध्यक्षता में दिल्ली में 31 जनवरी, 2026 को प्रेरणादायक मेगा टाउन हॉल बैठक का आयोजन किया जिसमें दिल्ली राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र के 1100 से अधिक समर्पित कार्मिक एक स्थान पर एकत्रित हुए। यह कार्यक्रम, सामूहिक उद्देश्य और संगठनात्मक तालमेल को सुदृढ़ करने के उद्देश्य से "एक टीम, एक स्वर, एक दृष्टिकोण" की एकीकृत थीम के अंतर्गत आयोजित किया गया था। बैठक में प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी ने बैंक भविष्य के विकास और परिवर्तन के लिए व्यावहारिक रोड-मैप साझा किया तथा कार्मिक-केंद्रित विभिन्न सुविधाओं की घोषणा की। कार्यपालक निदेशक श्री रवि मेहरा, श्री राजीवा तथा मुख्य सतर्कता अधिकारी श्री हेमंत वर्मा ने भी कार्मिकों के साथ अपने दृष्टिकोण साझा किए। इस अवसर पर विभिन्न मानकों के अंतर्गत उत्कृष्ट कार्य-निष्पादन करने वाली एनसीआर स्थित शाखाओं को पुरस्कृत भी किया गया।

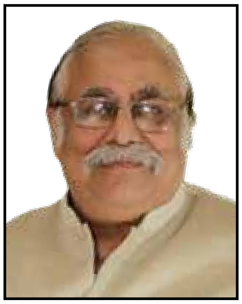

जुगाड़

वी. एस. मिश्रा

भारतीय विधाओं में सर्वाधिक लोकप्रिय और प्रचलित विधा है जुगाड़ की विधा। साम, दाम, दंड, भेद से भी अधिक प्रभावशाली और किसी भी कार्य हेतु निरंतर सफलता की प्रतिभूति, जुगाड़ की विद्या की महिमा अपरंपार है। भारतीय वांगमय की विशेषता है कि एक तरफ इसमें ईश्वर की सत्ता, आत्मा, परमात्मा और ब्रह्म ज्ञान पर शोध है तो समानांतर स्थिति में ही व्यावहारिक जीवन के लिए जो आवश्यक है, उस पर भी विशद विवेचना है। प्रागैतिहासिक काल में भी आश्रय के लिए पर्वत की कुंदराओं में आदमी ने शरण लिया, शरीर को शीत अथवा उष्ण वातावरण से सुरक्षित रखने के लिए वृक्ष की छाल का या पत्तों को अंगीकार किया तथा भोजन के लिए कंद-मूल और जानवरों को स्वीकार किया। यह सभी जुगाड़ विज्ञान के आदिम उदाहरण हैं।

अमूमन समय काल के साथ प्रगति और परिवर्तन के दौर में अतीत का बड़ा हिस्सा छूट जाता है या छोड़ दिया जाता है परंतु जुगाड़ का जीवट है कि वह तब भी प्रासंगिक था जब हम जल और थल के निरूपण पर प्रश्न उठा रहे थे और आज भी उतना ही महत्वपूर्ण है जब हम चांद, मंगल आदि दूसरे ग्रहों पर पहुंचने लगे हैं। इतना महत्वपूर्ण कि जुगाड़, विज्ञान के साधकों के लिए धरती पर कुछ भी अप्राप्य नहीं है। यह जरूर है कि जुगाड़ के तरीकों में, प्रयोग में निष्णात होना कोई बच्चों का खेल नहीं, इसकी साधना करनी पड़ती है, एक बार साधक प्रवीण हो गया तो फिर क्या है, हासिल ही हासिल करते जाइए। आदिम युग में जीवन को सुरक्षित रखने की विवशता में जुगाड़ किया जाता था पर आज जुगाड़ जीने का तरीका बन गया है चाहे इसकी आवश्यकता हो या न हो।

मेरे मित्रों में ऐसे जुगाड़ भरे हुए हैं। एक मित्र का बालक बारहवीं बोर्ड की परीक्षा में फेल हो गया, फेल की घोषणा भी हो गई और सांत्वना देने वाले ढांढ़स भी बंधा रहे थे कि मित्रवर के अंदर का साधक फुफकारने लगा। क्या मजाल कि मेरा बच्चा फेल कर जाए, उसी रात में सत्तू-चना बांधकर बोर्ड के मुख्यालय की ओर प्रयाण कर गए। दसेक दिन के बाद वापस आए तो उनके हाथ में बच्चे की मार्क-शीट थी, अस्सी प्रतिशत। उनके घर इस एवरेस्ट विजय के लिए सत्यनारायण पूजा का आयोजन किया गया जिसकी पूर्णाहूति में हम जैसे मित्र बंधु स्वादिष्ट भोजन से नवाजे गए। वैसे व्रत पूजा, भगवान के लिए सांकेतिक था कि हे ईश्वर आपने तो लुटिया गोल कर दी थी पर भला हो जुगाड़ का जो कभी पराजित नहीं हो सकता। फिर भी मैं मूढ़ता में पूछ बैठा, इतने अंकों में किसी नामी बड़े महाविद्यालय में प्रवेश मिल जाएगा। अबकी बार हुंकारते हुए बोले, महाविद्यालय की बात छोड़ो, मेरा बेटा मेडिकल में पढ़ने जाएगा, डाक्टर बनेगा।

मैं आश्वस्त था कि भाई जो कह रहे हैं, वह होगा ही क्योंकि अपनी जुगाड़ क्षमता का परिचय तो उन्होंने दें ही दिया था।

इतनी अभिभूत करने वाली विद्या की विवेचना हेतु आवश्यक है कि इसके तत्व, तरीके और तरकश में तारतम्य होना चाहिए। सर्वप्रथम जुगाड़ जमाने के लिए आत्म-विश्वास अति आवश्यक है जैसा कि मेरे मित्र में प्रदर्शित हुआ। दूसरा तत्व है हार नहीं मानने की जिद। इससे नहीं तो उससे और उससे नहीं तो किसी और से लेकिन 'रुक जाना नहीं' की तर्ज पर निरंतर प्रयास। तीसरा तत्व है आत्म-सम्मान को बैंक के लाकर में रखकर भूल जाना क्योंकि ऐसे कुछ झक्की मिल ही जाते हैं जो ईमानदारी के भूत से बंधे जुगाड़ को धता बताते हैं और वहां आपको नए-नए पैंतरे दिखाने पड़ेंगे जो पग-पग पर आपके सम्मान को चोटिल करेगा किंतु 'वीर तुम डटे रहो' के मंत्र के साथ इन ईमानदारों के चंगुल से निकलकर किसी अन्य जुगाड़वादी के साथ संबंध बनाना पड़ेगा, तभी जुगाड़ अंतिम विजय प्राप्त करेगा। अब जुगाड़ के तरीकों पर ध्यान दीजिए, सर्वप्रथम जिस विभाग, कार्यालय अथवा संस्था से काम निकलवाना है, वहां ऐसे व्यक्तियों की तलाश कीजिए जिसके लालच के किस्से प्रसिद्ध हों। ऐसे ही किसी व्यक्ति से आपका संपर्क हो जाए तो अगला कदम है उन बेचारे के शौक को जाना जाए। इतनी खोज काफी है। अब आप अपने उद्देश्य को प्रकट करते हुए सेवा प्रभार या अन्य सुविधा प्रभार के लिए तत्पर रहिए, बस जुगाड़ हो गया।

जुगाड़ शास्त्र और अर्थशास्त्र के बीच गहरा संबंध है। दोनों में यही कोशिश होती है कि कम से कम संसाधनों से अधिक से अधिक उद्देश्य की पूर्ति हो। दूसरे, दोनों मांग और पूर्ति के बीच सांप-सीढ़ी के खेल को तकनीक के रूप में प्रयोग करते हैं। जुगाड़ पूर्ति है तो साध्य में मांग का भाव निहित होता है और खिलाड़ी दोनों के बीच सामंजस्य करता हुआ अंततः मील के पत्थर तक पहुंच ही जाता है। पाश्चात्य संस्कृति में भी किसी न किसी रूप में विद्यमान होगा ही क्योंकि इसका स्वरूप ही सार्वभौमिक है। हर समाज में, हर काल में, हर देश में। मेरे एक अन्य मित्र पर्यटन के लिए जा रहे थे। रेल टिकट और आरक्षण नहीं मिल रहा था। घर के लोग संदेह में थे कि क्या पर्यटन रद्द हो जाएगा। मित्र आश्वस्त थे कि जाना ही है क्योंकि उन्हें जुगाड़ की शक्ति पर अखंड विश्वास था। रेल के डिब्बे में तो जुगाड़ की असीम संभावनाएं हैं। बर्थ मिला तो ठीक और न मिला तो फर्श है ही, जाना है तो जाना है। एक बार डिब्बे में बैठ जाने के बाद परिवार का एक सदस्य रेल कर्मचारी टीटीई के पीछे लग जाएगा, दूसरा बर्थ पर आसीन सहयात्रियों से मधुर संभाषण में लग जाएगा और धीरे-धीरे बर्थ के कोने पर मुकाम हासिल कर लेगा। थोड़ा ढीठ होगा, वह अख़बार बिछा कर बैठ जाएगा। जैसे-जैसे जिनको भी एडजस्टमेंट का मौका मिलेगा, यात्रा की यातना मिटती जाएगी। शर्त वहीं है कि यहां आपको अपनी सामाजिक, आर्थिक, स्थिति को भुलाकर मात्र जुगाड़ पर आश्रित रहना पड़ेगा।

पीछे कोरोना के आतंक में और उस पर से पुलिस की घोषणा कि 'तोड़ देंगे कोना-कोना, नहीं होने देंगे कोरोना'। घर से बाहर निकलना मुश्किल था। आम ज़रूरत की चीजों के लिए थोड़ी बहुत छूट से उदर पोषण तो हो जाता था पर जिनको सिगरेट, गुटखा की आदत थी, उनके लिए सरकार ने प्रबंध ही नहीं किया। सरकार की इस उदासीनता और अकर्मण्यता से व्यथित होकर जुगाड़ का ही मार्ग बच गया। कुछ बलिदानी व्यक्तियों ने इन बहुमूल्य वस्तुओं का जुगाड़ किया और मोहल्ले-मोहल्ले घूमकर एक का पच्चीस वसूलते हुए इच्छुकों को सुलभ कराते रहें। ऐसे आपात काल में इन बहुमूल्य पदार्थों का मिल जाना ही बड़ी बात थी। यह जुगाड़ का ही प्रताप था कि इन अति आवश्यक वस्तुओं का अभाव नहीं झेलना पड़ा।

घुमने-फिरने का शौकीन होने के लिए भी जुगाड़ कला में माहिर होना जरूरी है। भला हो सरकार का चार वर्ष में भारत के किसी भी जगह सपरिवार जाने के लिये रेल भाड़ा दे दिया जाता है लेकिन सरकार ने इस दौरान कार्मिकों को होने वाले अन्य कष्टों के निवारणार्थ कोई व्यवस्था नहीं की। होटल, सराय, खाना-पीना, लोकल साइट सीइंग पर भाड़े से कुछ ज्यादा ही लगता है, कानून नहीं है तो व्यवस्था भी नहीं है। यात्रा के इस अगले चरण में जुगाड़ ही बचाव का रास्ता है और इस प्रयास में सभी रिश्तेदार, मित्रों की सूची खंगाली जाती है ताकि गंतव्य पर समुचित सहूलियत हो सके और कुछ बचा ही लिया जाए। इसी प्रक्रिया को जुगाड़ बैठाना कहा गया है। बड़ी बात तो यह है कि अब सरकारें भी जुगाड़ से बन रही हैं। पूर्व काल में जनता एक ही दल को इतनी सीटों पर विजयी बना देती थीं कि सरकार ऐसे ही बन जाती थीं। फिर खंडित जनादेश का युग आया और फिर जुगाड़ से ही सरकार मिली-जुली तकनीक पर बनने लगी। जनादेश देश के कर्णधारों को स्पष्ट संदेश दे रहा था कि देख लो हम

नागरिकों के जीवन का तो आधार ही है जुगाड़ और यही तुम भी करो तो कम से कम हमारी कशमकश का थोड़ा अनुभव तुम्हें भी मिलेगा। जब जीवित रहने के लिए भी मौलिक आवश्यकताओं की पूर्ति प्रश्नगत हो तो बेहतर है कि जीवन को जुगाड़ के हवाले कर दिया जाए क्योंकि एकमेव जुगाड़ ही आसरा है।

धीरे-धीरे जुगाड़ एक प्रवृत्ति का रूप ले रही है। जो सामान्य रूप से किया जा सकता है उसके लिए भी जुगाड़ लगाना प्रवृत्ति ही तो है। स्कूलों में संविदा शिक्षकों की भर्ती सरकार द्वारा शिक्षा के क्षेत्र में जुगाड़ करने की तरह है और बेचारे शिक्षक भी अपने आपको स्थाई शिक्षक बनाने की जुगाड़ में लगे रहते हैं। आउटसोर्सिंग भी व्यवस्था को चलाने के लिए जुगाड़ है। आधुनिक काल में जुगाड़ सर्वव्यापी हो चुका है। ई-वाणिज्य ने घर में बैठे-बैठे बाजार का जुगाड़ कर दिया है। किसी भी सरकारी विभाग में किसी प्रकार का काम हो, सरकारी प्रक्रिया से इतर जुगाड़ ही बेहतर तरीका होता है अथवा आप नियमों, प्रक्रिया के चक्रव्यूह में इस तरह उलझेंगे कि दो दर्जन चप्पल टूट जाएंगे पर बेचारा काम इंतजार करता रहेगा। रेल आरक्षण के लिए पहले एजेंट आदि टिकट का जुगाड़ करते थे और इनसे प्रेरणा लेकर रेलवे ने ही तत्काल और त्वरित तत्काल की व्यवस्था का जुगाड़ किया है।

हाल में समाचार आया है कि विभिन्न प्रतियोगिता परीक्षाओं में विद्यार्थियों ने सफलता के लिए परीक्षा पूर्व प्रश्न पत्रों को ही हासिल करने का जुगाड़ बना लिया और इस पुण्य कार्य में सहयोग के लिए समाज के विभिन्न क्षेत्र जैसे राजनीति, अपराध, बेरोज़गारी से सेवा का जुगाड़ करने के लिए कर्मवीर आ गए ताकि उनके धनार्जन का भी जुगाड़ हो जाए। सेवा शुल्क, रिश्वत आदि शब्दों का स्वरूप निकृष्ट जैसा लगता है जबकि जुगाड़ एक सम्मानित शब्द है, यद्यपि दोनों का प्रयास और परिणाम येन-केन किसी भी उद्देश्य की सदगति के लिए ही किया जाता है। पश्चिमी देशों में जुगाड़ का समानार्थी शब्द है, लॉबिंग और वहां भी यह धड़ल्ले से चल रहा है। शिक्षा, संस्कार आदि में उलझकर बहुत दिनों तक अपनी समस्याओं का हल नहीं मिलता था तो मैंने एक मित्र से समझने की चेष्टा की कि मेरे प्रयास में क्या कमी है जो मैं साधारण दिखने वाले कार्य में भी अपनी सलाहियत के बावजूद उलझ जाता हूं। मित्र ने बताया कि तू जुगाड़ पर ध्यान नहीं देता। शिक्षा, संस्कार, नैतिकता वगैरह ठीक है पर जुगाड़ के बिना आज के युग में कुछ भी संभव नहीं।

किसी संस्था में प्रोन्नति के लिए होने वाली परीक्षा या साक्षात्कार के समय विषय पर अपनी समझ से अधिक जुगाड़ पर ध्यान केंद्रित किया जाने लगा है। किस उच्चाधिकारी के माध्यम से सफलता मिलेगी, उसकी तलाश और फिर वहां तक पहुंचने का जुगाड़। अगर जुगाड़ बैठ जायेगा तो सफलता का स्वरूप और लाभार्थी कोई हो, मेधा और कर्मठता का बलिदान निश्चित है। आज से दस-बीस वर्ष पूर्व परीक्षा की तैयारी की जाती थी, दिन रात परिश्रम किया जाता था, तब भी जुगाड़ किया जाता था लेकिन उन पुस्तकों का जुगाड़ या फिर उस ज्ञान का जुगाड़ जो परीक्षा की नैया पार लगा दे। आज परीक्षा की घोषणा के साथ प्रश्न-पत्र का जुगाड़ या फिर ऐसे विद्वान का जुगाड़ जो प्रश्न पत्रों का हल परीक्षा भवन तक पहुंचा सके। इस तरह का जुगाड़ समाज को दिशाहीन बना देगा।

जीवन जब जटिल होने लगे, महत्वाकांक्षा आसमान छूने लगे और आदमी दुनिया की हर नेमत अपने लिए ही चाहता हो तथा जब स्वार्थ, लिप्सा चरम पर हो तो सामान्य प्रक्रिया से प्रतिफल हासिल होना संभव ही नहीं है। सदाचार और कदाचार के द्वंद में सदाचार पिछड़ने लगे तो सामाजिक असंतोष का प्रसार होगा और फिर सब प्राप्त करने की चाहत में एकमेव उपाय दृष्टिगत होता है, वह है जुगाड़। प्राचीन काल में अस्तित्व के संघर्ष में मानवता को सुरक्षित करने के लिए जुगाड़ का प्रयोग होता था परंतु आज वह अपना उल्लू सीधा करने के लिए किया जाने लगा है। जब ऐसी स्थिति हो तो जुगाड़ जैसा ब्रह्मास्त्र भी परमाणु शक्ति की तरह मानवता को ही निगलने लगेगा।

परमाणु से बिजली बने, ऊर्जा प्रबंधन हो तो मानव कल्याण और यदि बम बनकर बरसे तो इंसानियत का सत्यानाश। कुल मिलाकर जुगाड़ अपने आप में एक सशक्त विधा है क्योंकि यह विभिन्न विकल्पों में सर्वश्रेष्ठ का चुनाव करने में दिशा का द्योतक है लेकिन सिर्फ इसके भरोसे मानवीय प्रयास की तिलांजलि दे देना जुगाड़ नहीं अपितु कुत्सित मानसिकता है। आधुनिक काल में परिश्रम के स्थानापन्न के तौर पर जुगाड़ का प्रयोग होने लगा है। किसी भी उपलब्धि के लिए जी तोड़ परिश्रम करने की जगह प्रारंभ से ही जुगाड़ के भरोसे रहना, मानव अस्मिता और प्रतिभा के लिए निस्संदेह विघ्न है और यह पूरे व्यक्तित्व को एक ऐसे तमस में ढकेल देता है कि प्रयास की जगह सिर्फ जुगाड़ का आसरा रह जाता है। जुगाड़ नकारात्मक होने लगे तो समाज भी अगड़म-बगड़म होने लगता है और जो प्रतिभाशाली हैं, प्रतियोगी हैं, समाज को जिनसे अपेक्षा है, वह भी जुगाड़ के सामने नतमस्तक हो जाते हैं। जुगाड़ और जुगाड़वादियों को शत-शत नमन करते हुए मैं लेखनी को यहीं विराम देता हूं क्योंकि जीवन यापन के लिए मुझे भी जुगाड़ करना है।

-सेवानिवृत्त वरिष्ठ प्रबंधक
पंजाब एण्ड सिंध बैंक

नराकास फरीदकोट छमाही बैठक

राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार के निर्देशानुसार फरीदकोट में पंजाब एण्ड सिंध बैंक की अध्यक्षता में नगर राजभाषा कार्यान्वियन समिति का गठन किया गया है। 28 जनवरी, 2026 को मुख्य प्रबंधक श्री पीयूष कुमार पंकज की अध्यक्षता में नराकास फरीदकोट की छमाही बैठक का आयोजन किया गया। इस बैठक में प्रधान कार्यालय से मुख्य प्रबंधक (राजभाषा) श्री निखिल शर्मा भी विशेष रूप से उपस्थित रहे।

काव्य-मंजूषा

ग़ज़लें

कितने देवी-देव मनाए अम्माँ ने
तब ये पाँचों बेटे जाए अम्माँ ने

अपनी गुदड़ी को रख कर भूल गई
लेकिन अपने लाल सजाए अम्माँ ने

अपने को हर चीज़ की ख़ातिर तरसाया
बच्चों के सब नाज़ उठाए अम्माँ ने

अपनी इक पल भी कोई परवाह न की
बस बेटों के भाग बनाए अम्माँ ने

सब बहुओं को बेटी जैसा प्यार दिया
लेकिन सबसे ताने खाए अम्माँ ने

घर में इक कोना तक नहीं मिला उनसे
जिन सबके घर-बार बनाए अम्माँ ने

जिनके घरों में पल रही हों बेटियाँ
काँच की होती हैं उनकी खिड़कियाँ

कौन जाने किस दिशा में जाएंगी
तैरती-फिरती हुई ये तितलियाँ

मन में रहती हैं हज़ारों हलचलें
और होंठों पर सजी ख़ामोशियाँ

उनकी ये यादें यहाँ रह जाएंगी
गुड्डे-गुड़िया, रस्सियाँ अठखेलियाँ

याद जब सावन में ये घर आएगा
दूर, आँखों से बहेंगी बदलियाँ

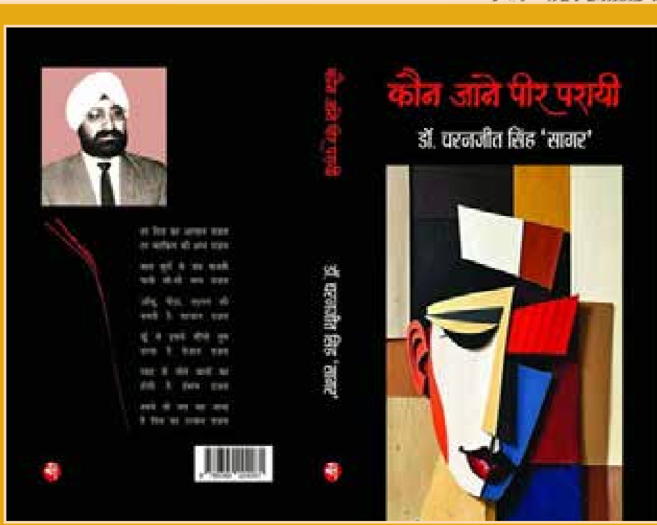

लेखक परिचय : राजभाषा विभाग के सेवानिवृत्त मुख्य प्रबंधक **डॉ. चरनजीत सिंह** का नवीनतम ग़ज़ल-संग्रह **"कौन जाने पीर परायी"**, हिंदी अकादमी, दिल्ली के आर्थिक सहयोग से प्रकाशित हुआ है। इस ग़ज़ल-संग्रह में परंपरागत शैली व आधुनिक ग़ज़लों का शानदार मिश्रण देखा जा सकता है। इस पुस्तक में 'निज से समूह की यात्रा' का सफलतापूर्वक निर्वहन किया गया है। **पीएसबी परिवार की ओर से डॉ. साहब को ढेरों शुभकामनाएं एवं बधाइयां।**

काव्य-मंजूषा

मैं बैंकर हूं

सुबह तैयार होकर बैंक पहुंचना,
दरवाजे पर खड़ी कस्टमर्स की फौज को देखना ।
दिन शुरू होता है टारगेट की लिस्ट से,
ग्राहकों के नाम निकालो किसी लंबी फेहरिस्त से।

कैश काउंटर पर तो जैसे बंटता है लंगर,
भीड़ वहीं होती है सबसे भयंकर।
डेबिट क्रेडिट अरे ये भी कोई काम होता है,
कैश कम हो जाए तो अपनी जेब से भरना होता है।

हर बंदे को अपना काम ज्यादा लगता है,
सेविंग वाला लोन वाले से और लोन वाला सेविंग वाले से जलता है।
कस्टमर डीलिंग से थक कर दो पल जब सुकून मिल पाता है,
तभी कुछ न कुछ काम के लिए कहीं से फोन आ जाता है।

जिसने लोन लिया वह तो शांति से रहता है,
खाता एनपीए न हो जाए इसलिए अफसर रात तक ब्रांच में बैठता है।
जिस दिन चली जाए कनेक्टिविटी उस दिन तो अलग ही कोहराम होता है,
जो कभी न बोला हो वो कस्टमर भी सुनाने में परहेज नहीं करता है।

बहुत सी मुश्किलें सहकर भी बैंकर अपने चेहरे पर मुस्कान रखता है,
घर से मिलों दूर रहकर न जाने कितनी बार रोता है।
कुछ भी हो बोलने वाले तो बहुत कुछ बोलेंगे,
लेकिन हम बैंकर आपको हमेशा अपनी ड्यूटी पर तत्पर मिलेंगे।

अनमोल भनोट
ग्राहक सेवा प्रतिनिधि
फुटबॉल चौक, जालंधर, पंजाब

सेवा के रंग, हिंदी के संग

हिंदी का मान है, हिंदी की शान है
भारत की पहचान में हिंदी की जान है।

ग्राहक के दिल तक, जो भाषा पहुंचाए
अपनी हिंदी सबको और पास ले आए।

डिजिटल हो या शाखा का द्वार
हिंदी में सेवा है, सबसे बड़ा उपहार।

गांव से शहर तक विश्वास जगाए
हर दिल को अपने पन से भर जाए।

ग्राहक-सेवा में जब हिंदी अपनाए
सेवा का मार्ग और सरल हो जाए।

जहाँ सेवा जीवन का आधार बने
वहाँ ग्राहक का विश्वास सौगात बने।

हिंदी के साथ सेवा से, करें प्रयास सफल
अपना देश में अपनी भाषा का ही हो विकल्प।

पंजाब एण्ड सिंध बैंक का यही है संदेश
सेवा ही जीवन बने, यही हो विशेष।

बिन्नी गुप्ता
अधिकारी
सेक्टर 10-ए, गुरुग्राम

P.S.B

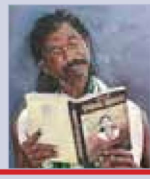

ଲୋକକବି ରତ୍ନ
ପଦ୍ମଶ୍ରୀ ଡଃ ହଳଧର ନାଗ

ପ୍ରଦୀପ କୁମାର ରାୟ

କବି କଳ୍ପନା ଓ ପ୍ରତିଭାର ଅପୂର୍ବ ବିଭୂତିର ଅନ୍ୟ ନାମ ହଳଧର ନାଗ। ସମଗ୍ର ପଶ୍ଚିମ ଓଡିଶାରେ ଲୋକକବି ଭାବରେ ବିଖ୍ୟାତ ଏଇ କବି ଆମ ସମୟର ଏକ ବିରାଟ ଆଶ୍ଚର୍ଯ୍ୟ। ଯେଉଁ ସମୟରେ କବିତାର ପାଠକ ଏକ ବିରଳ ପ୍ରଜାତିରେ ପରିଣତ ହୋଇସାରିଛି, ସେହି ସମୟରେ କବି ହଳଧରଙ୍କ କବିତା ଶୁଣିବା ପାଇଁ ହଜାର ହଜାର ଲୋକ ଅପେକ୍ଷା କରି ରହନ୍ତି ମଞ୍ଚ ଆଗରେ। ସେ ତାଙ୍କ ଗୋଟି ଗୋଟି କବିତା ମୁଖସ୍ଥ ରଖିଛନ୍ତି। ଘଣ୍ଟା ଘଣ୍ଟା ଧରି ସେ କବିତା ପଢନ୍ତି। ତାଙ୍କୁ ନିମନ୍ତ୍ରଣ ନକଲେ ପଶ୍ଚିମଓଡିଶାର କୌଣସି କାର୍ଯ୍ୟକ୍ରମ ସମ୍ପୂର୍ଣ୍ଣ ହୁଏନା। ଓଡ଼ିଶାର ଲୋକ କବିରତ୍ନ ନାମରେ ବିଖ୍ୟାତ ହଳଧର ନାଗଙ୍କ ଜନ୍ମ ମାର୍ଚ୍ଚ ୩୧, ୧୯୫୦ ମସିହାରେ ବରଗଡ ଜିଲ୍ଲାର ଘେଁସର ଏକ ଛୋଟ ପରିବାରରେ ହୋଇଥିଲା। ଘେଁସ ପଶ୍ଚିମଓଡିଶାର ଏକ ଐତିହାସିକ ଗାଁ। ସୁରେନ୍ଦ୍ର ସାଏଙ୍କ ନେତୃତ୍ୱରେ ବ୍ରିଟିଶରାଜ ବିରୁଦ୍ଧରେ ହୋଇଥିବା ସଶସ୍ତ୍ର ଆନ୍ଦୋଳନର ତୀର୍ଥ ଭୂମି ହେଉଛି ଘେଁସ। ଏକ ଐତିହାସିକ ଗାଁର ଅତି ସାଧାରଣ ବାଳକଟିଏ ଅସାଧାରଣ ଇତିହାସ ରଚନା କରିବ ଏକଥା ଘେଁସ ଗାଁର କେହି କେବେ ବି କଳ୍ପନା କରିନଥିଲେ। ମାତ୍ର ୧୦ ବର୍ଷ ବୟସରେ ନିଜ ବାପା-ମାଆଙ୍କୁ ହରାଇଥିବା ଏହି ଲୋକକବିଜଣଙ୍କ ପ୍ରାଥମିକ ଶିକ୍ଷାରୁ ହିଁ ସ୍କୁଲ୍ ଛାଡିଥିଲେ। ସେ କୁହନ୍ତି, ମାତ୍ର ଅଢେଇ କ୍ଲାସ ଯାଏଁ ପାଠ ପଢିଛନ୍ତି। ବାପା ମାଆ ଛେଉଣ୍ଡ ହଳଧର ତୃତୀୟ ଅଧାରୁ ସ୍କୁଲ ଛାଡିଦେଇଥିଲେ। ଜଳଖିଆ ଦୋକାନରେ ବାସନ ମାଜି ସେ ପେଟ ପୋଷୁଥିଲେ। ପରେ ସେ ଘେଁସ ଉଚ୍ଚ ବିଦ୍ୟାଳୟର ଏକ ଛାତ୍ରାବାସରେ ରୋଷେଇଆ ଦାୟିତ୍ୱ ତୁଲାଇଥିଲେ। କିଛି ଦିନ ପରେ ସେ ସେହି ସ୍କୁଲ୍ ବାହାରେ ଏକ ଛୋଟ କ୍ୟାବିନ୍ ପକାଇ ଜଳଖିଆ ଓ ଷ୍ଟେସନାରୀ ଜିନିଷ ବିକିବାକୁ ଲାଗିଲେ। ସେତେବେଳ ସମୟରେ ସେ ପିଲାମାନଙ୍କ କଲମରେ ୧୦ ପଇସାରେ କାଳୀ ଭରୁଥିଲେ। ସେ ମାଳତୀଙ୍କୁ ବିବାହ କରିଥିଲେ ଏବଂ ତାଙ୍କର ନନ୍ଦିନୀ ନାମରେ ଝିଅଟିଏ ଅଛି।

କଥାରେ ଅଛି ମଣିଷ ମଧ୍ୟରେ ଥିବା କଳା ଓ ସୃଜନଶୀଳତା ଅଧିକ ଦିନ ଧରି ଲୁକ୍କାୟିତ ହୋଇ ରହେ ନାହିଁ। ହଳଧରଙ୍କ କ୍ଷେତ୍ରରେ ମଧ୍ୟ ଏହା ଘଟିଲା। ହଳଧର ଜଣେ ସାଧାରଣ ମଣିଷ, ଉଚ୍ଚଶିକ୍ଷିତ ଭାଷାବିତ୍ ନୁହନ୍ତି। ଗାଉଁଲି ପରିବେଶକୁ ଆଧାର କରି ନିଛକ କଳ୍ପନା ଦ୍ୱାରା ସେ ଅତି ସାଧରଣ ଲୋକଟିଏ ଭଳି ହୃଦୟର ଗାଥାକୁ କବିତାର ରୂପ ଦିଅନ୍ତି। ତାଙ୍କର ଏହି ଯାତ୍ରା ଆରମ୍ଭ ହୁଏ ୧୯୯୦ରେ ଲେଖିଥିବା ପ୍ରଥମ କବିତା “ଧୋଡୋ ବରଗଛ”ରୁ। ପରେ ସେ ବେଶ୍ କିଛି କବିତା ସଙ୍କଳନ କରିଛନ୍ତି। ତାଙ୍କର ୨୦ରୁ ଉର୍ଦ୍ଧ୍ୱ ମହାକାବ୍ୟ ମଧ୍ୟରେ ରହିଛି ‘ଅଛିଆ’, ‘ବଛର୍’, ‘ମହାସତୀ ଉର୍ମିଳା’, ‘ତାରା ମନ୍ଦୋଦରୀ’, ‘ସିରି ସମଲାଇ’, ‘ପ୍ରେମ ପାଇଛନ୍’, ‘ବୀର ସୁରେନ୍ଦ୍ର ସାଏ’, ‘ସନ୍ଥ କବି ଭୀମଭୋଇ’, ‘ଋଷି କବି ଗଙ୍ଗାଧର’। କଟକର ଫ୍ରେଣ୍ଡସ୍ ପବ୍ଲିକେସନ୍ ଦ୍ୱାରା ପ୍ରକାଶିତ “ହଲଧର ଗ୍ରନ୍ଥାବଳୀ”ର ପ୍ରଥମ ସଂକଳନରେ ଏଥି ମଧ୍ୟରୁ ଅନେକ ଗୁଡିଏ କବିତା ପ୍ରକାଶ ପାଇ ସାରିଛି। ପରେ ସମ୍ବଲପୁର ବିଶ୍ୱବିଦ୍ୟାଳୟ ପକ୍ଷରୁ ହଳଧର ଗ୍ରନ୍ଥାବଳୀର ଦ୍ୱିତୀୟ ସଂକଳନ ପ୍ରକାଶ ପାଇଲା।

ଲୋକଗୀତ ଏବଂ ଲୋକନୃତ୍ୟ ପ୍ରତି ପିଲାଦିନରୁ ହଳଧରଙ୍କ ଥିଲା ପ୍ରଚୁର ଆଗ୍ରହ। ରାମାୟଣ, ମହାଭାରତ ଶୁଣି ଶୁଣି ଡାଲଖାଇ, ରସରକେଲି ଗୁଣୁ ଗୁଣେଇ ଆରମ୍ଭ ହୋଇଥିଲା ତାଙ୍କ କବିତ୍ୱର ଯାତ୍ରା । ଅଳ୍ପ ପାଠୁଆ ହଳଧରଙ୍କ ମନ ଓ ହୃଦୟକୁ ନିଜର ନିବାସ ରୂପେ ବାଛି ନେଇଥିଲେ କବିତାର ସରସ୍ୱତୀ। ବ୍ୟାସ, ବାଲ୍ମିକୀ, ଗଙ୍ଗାଧର ମେହେର ଓ ଭୀମଭୋଇ ତାଙ୍କ ଆଗରେ ପ୍ରେରଣାର ଉତ୍ସ ଥିଲେ। ତାଙ୍କ କାବ୍ୟସିଦ୍ଧି ଏହି କଥା ପ୍ରମାଣିତ କରେ ଯେ, କବିତାର ଉତ୍ସ ସବୁବେଳେ ସ୍ୱାଭାବିକ ଏବଂ କବିତା ରଚନା କୌଣସି ବୌଦ୍ଧିକ କସରତର ଆବଶ୍ୟକତା ରଖେ ନାହିଁ। ତାଙ୍କ କବିତାରେ ପଶ୍ଚିମ ଓଡିଶାର ଜନଜୀବନ, ପ୍ରାକୃତିକ ପରିବେଶ, ଚଳଣି, ପରମ୍ପରା, ଲୋକଗୀତ ଓ ଲୋକନୃତ୍ୟର ଛନ୍ଦ ଏବଂ ସର୍ବୋପରି ଜୀବନର ଉଦ୍ଦାମତା ପ୍ରତିଫଳିତ ହୋଇଥାଏ। କାବ୍ୟ ଓ ପୁରାଣରୁ ବିଷୟବସ୍ତୁ ଚୟନ କରୁଥିଲେ ହେଁ ବର୍ଣ୍ଣନା ଏବଂ ସର୍ଜନା କ୍ଷେତ୍ରରେ ତାଙ୍କ ଶୈଳୀ ମୌଳିକ। ଆଞ୍ଚଳିକ ଅସ୍ମିତାର ଉଦ୍‌ଗାତା ରୂପେ ଏବେ ସମଗ୍ର ପଶ୍ଚିମ ଓଡିଶାରେ ହଲଧର ନାଗ ଲୋକ ସଂସ୍କୃତିର ଦେବଦୂତ ପାଲଟି ଯାଇଛନ୍ତି। ଆଞ୍ଚଳିକ ସଂସ୍କୃତିର ପ୍ରାଣବନ୍ତ ପ୍ରତୀକ ତାଙ୍କର କବିତା।

ପଶ୍ଚିମ ଓଡିଶା ବିଶେଷ ଚର୍ଚ୍ଚାରେ ଥାଏ ଏ ଅଞ୍ଚଳର ଦାରିଦ୍ର୍ୟ, ଅନାହାର ମୃତ୍ୟୁ, ଦାଦନ ଶ୍ରମିକ ଓ ପିଲାବିକ୍ରୀ ଇତ୍ୟାଦି ପ୍ରସଙ୍ଗ ପାଇଁ। ତେଣୁ ଏ ଅଞ୍ଚଳକୁ ନେଇ ବା ଏ ଅଞ୍ଚଳରେ ରହି ଯେଉଁମାନେ କବିତା ଲେଖନ୍ତି ସେମାନଙ୍କ ପାଇଁ କବିତାର ବିଷୟବସ୍ତୁ ପ୍ରାୟ ପୂର୍ବନିର୍ଦ୍ଧାରିତ। ସ୍ଥିତାବସ୍ଥା ବିରୁଦ୍ଧରେ ହେଉ କିଂବା ଏକ ନୂତନ ଆଂଦୋଳନର ସୂଚନା ହେଉ କବିତାରେ ତାର ସଙ୍କେତ ରହିଥାଏ। ଯଦିଓ ଆଧୁନିକ ଓଡିଆ କବିତାର ଅସ୍ପଷ୍ଟ, ରହସ୍ୟମୟ ଏବଂ ଦୁର୍ବୋଧ ପରମ୍ପରାରରେ ଏସବୁ ସ୍ୱରର ବିଶେଷ କିଛି ମାନେ ନଥାଏ। ପରମ୍ପରାର ମୁଖ୍ୟସ୍ରୋତରେ ଗୌଣସ୍ରୋତର ଭାବାବେଗ ପ୍ରାୟତଃ ବିଲୀନ ହୋଇଯାଏ।

ସୌଭାଗ୍ୟକ୍ରମେ ହଲଧର ନାଗଙ୍କ କବିତା ଏହି ଦୁର୍ଭାଗ୍ୟଜନକ ପରିଣତି ଭୋଗିନାହିଁ। ପ୍ରାୟତଃ ପୁରାଣ, କାବ୍ୟ ଓ କଳ୍ପନାର ଆଧାରରେ ହୋଇଥାଏ ତାଙ୍କ କବିତ୍ୱର ପ୍ରତିଷ୍ଠା। ତେଣୁ ଆଧୁନିକତା କିମ୍ବା ଉତ୍ତର ଆଧୁନିକତାର ବ୍ୟୁହ ଭିତରେ ବାଟବଣା ଆଲୋଚକମାନଙ୍କ ପାଇଁ ତାଙ୍କ କବିତା ପାରମ୍ପରିକ କିମ୍ବା ପ୍ରାଚୀନପନ୍ଥୀ ମନେ ହୋଇପାରେ। କିନ୍ତୁ ଟିକେ ଗଭୀର ଭାବରେ ତାଙ୍କ କବିତାକୁ ଅନୁଧ୍ୟାନ କଲେ ଗୋଟିଏ କଥା ସ୍ପଷ୍ଟ ହୋଇଯାଏ

ଯେ, କଳ୍ପନା ଏଠି ବିଦ୍ରୋହର ଏକ ଛଦ୍ମ ଆୟୁଧ। ଶୋଷଣ ଓ ଅବହେଳାର ନିଶାଗ୍ରସ୍ତ ଗୋଟିଏ ଅଞ୍ଚଳର ଜନଜୀବନରେ ଚାଞ୍ଚଲ୍ୟ ଖେଳାଇବା ପାଇଁ ପୌରାଣିକ କଳ୍ପନାକୁ ଆଧାର ଭାବରେ ଗ୍ରହଣ କରିବା ଛଡା ଅଲଗା ବାଟ ନଥାଏ। ପୌରାଣିକ କଳ୍ପନା ଆଧାରରେ ଜାତୀୟ ଅସ୍ମିତାର ପ୍ରତିଷ୍ଠା ପାଇଁ କାବ୍ୟିକ ପ୍ରୟାସ କରିଥିବା ସାରଳା ଦାସ, ଭୀମ ଭୋଇ, ଗଙ୍ଗାଧର ମେହେରଙ୍କ ପରି ହଲଧର ନାଗ ସେଇ ବିଷୟବସ୍ତୁ ଓ ଶୈଳିର ଚୟନ କରିଛନ୍ତି। ତାଙ୍କ ବର୍ଣ୍ଣନାରେ ପଶ୍ଚିମ ଓଡିଶାର ଜୀବନ୍ତ ଚିତ୍ର ପାଠକର ଆଖି ଆଗରେ ଚଳଚ୍ଚିତ୍ର ପରି ଭାସି ଉଠେ। ତାଙ୍କ କଳ୍ପନା ସାମର୍ଥ୍ୟ କ୍ଲାସିକ୍ କବିମାନଙ୍କର ସାମର୍ଥ୍ୟ ସହ ପ୍ରାୟ ସମାନ।

ପାରମ୍ପରିକ ଶିକ୍ଷାରୁ ବଞ୍ଚିତ ହଲଧର ନାଗଙ୍କ କବିତାର ଭାଷା ତାଙ୍କ ମାତୃଭାଷା ସମ୍ବଲପୁରୀ କୋଶଳୀ। ଏକ ଉପଭାଷା ବୋଲି ଗଣାଯାଉଥିବା ସମ୍ବଲପୁରୀ କୋଶଳୀ ଭାଷାରେ ଯେଉଁ ବୌଦ୍ଧିକ ଉଚ୍ଚତାର କାବ୍ୟ ରଚନା ହୋଇଛି, ତାହା ସେ ଭାଷାର ଉତ୍କର୍ଷ ଓ ମୌଳିକତାର ପରିଚୟ। ଓଡିଶା ଭାଷା ସହ ସମାନ୍ତରାଳ ଭାବେ ସମ୍ବଲପୁରୀ-କୋଶଳୀର ଏହି ପ୍ରତିଷ୍ଠାକୁ ନକରାତ୍ମକ ଦୃଷ୍ଟିରେ ନଦେଖିଲେ ଓଡିଆ ସାହିତ୍ୟର ଯଥେଷ୍ଟ ମଙ୍ଗଳ ହେବ। ପଶ୍ଚିମ ଓଡିଆର ଅନେକ ଯୁବ କବି ଏବେ ହଲଧରଙ୍କ ଶୈଳୀକୁ ଅନୁକରଣ କରୁଛନ୍ତି। ତାଙ୍କର ସେହି ନିଆରା ଶୈଳୀ "ହଲଧର ଧାରା" ନାମରେ ଖ୍ୟାତ। ନିଜର ଗୀତ କବିତା ଦ୍ୱାରା ହଲଧର ସବୁବେଳେ ଦଳିତ, ମଳିମୁଣ୍ଡିଆଙ୍କ ପାଇଁ ଲଢ଼େଇ କରି ଆସିଛନ୍ତି। ସେହିପରି ସମ୍ବଲପୁରୀ-କୋଶଳୀ ଭାଷା ପାଇଁ ଲାଗି ରହିଥିବା ଲଢ଼େଇରେ ମଧ୍ୟ ସେ ପ୍ରମୁଖ ଅଂଶଗ୍ରହଣ କରି ଆସିଛନ୍ତି।

କବି ହଲଧରଙ୍କ କାବ୍ୟକୃତିରେ ସବୁଠୁ ଉଲ୍ଲେଖନୀୟ ଦିଗଟି ହେଉଛି ତାଙ୍କ ଭାଷା ପ୍ରୟୋଗର ଅପୂର୍ବ ସ୍ୱତଃସ୍ଫୂର୍ତ୍ତତା। ପୁରାଣରେ ବର୍ଣ୍ଣିତ ବ୍ୟାସଙ୍କ କଥନ ଓ ଗଣେଶଙ୍କ ଶ୍ରୁତଲିଖନ ପରି ତାଙ୍କର କାବ୍ୟଧାରା। ହଲଧରଙ୍କ କାବ୍ୟକୃତିରେ ଏତେ ଟିକିଏ ବି ଦୁର୍ବୋଧତା ବା ଜଟିଳତା ନଥାଏ। ତାଙ୍କ ନିରୀହତା ପରି କବିତାର ଆବେଦନ ମଧ୍ୟ ନିରୀହ ଓ ରସମୟ। ପଶ୍ଚିମ ଓଡିଶାର ପ୍ରାକୃତିକ ସୌନ୍ଦର୍ଯ୍ୟ, ଜନଜୀବନର ଆଚାର, ଆଚରଣ, ପରମ୍ପରା ଓ ସଂସ୍କୃତି ସୌନ୍ଦର୍ଯ୍ୟବୋଧ ଏବଂ ଭାରତୀୟ ଆଧ୍ୟାତ୍ମିକତାର ସରଳ ପରିବେଷଣ ତାଙ୍କ ରଚନାର ଶ୍ରେଷ୍ଠତମ ସିଦ୍ଧି। ତା ସହ ତାଙ୍କ କବିତାରେ ଥାଏ ଶାଣିତ ଶ୍ଳେଷ ଓ ତୀବ୍ର କଟାକ୍ଷ। ଆଜି ହଲଧର ନାଗଙ୍କୁ କୌଣସି ପରିଚୟର ଆବଶ୍ୟକତା ନାହିଁ। ହଲଧର ନାଗଙ୍କୁ 2016ରେ ପଦ୍ମଶ୍ରୀ ଉପାଧି ମିଳିଥିଲା। ତା ପରେ 2017ରେ କେନ୍ଦ୍ର ସାହିତ୍ୟ ଏକାଡେମି ହଲଧର ନାଗଙ୍କୁ କୋଶଳୀ ଭାଷା ପାଇଁ "ଭାଷା ସମ୍ମାନ"ରେ ପୁରସ୍କୃତ କଲେ।

ସମ୍ବଲପୁର ବିଶ୍ୱବିଦ୍ୟାଳୟ, କୁରୁକ୍ଷେତ୍ର ବିଶ୍ୱବିଦ୍ୟାଳୟ ଏବଂ ଇଗ୍ନୋ ତାଙ୍କ କବିତା ସଂଗ୍ରହକୁ ପାଠ୍ୟକ୍ରମର ଅଂଶ ଭାବରେ "ହଲଧର ସାହିତ୍ୟ" ନାମରେ ଅନ୍ତର୍ଭୁକ୍ତ କରିଛନ୍ତି। ବିବିସି ତାଙ୍କ ଉପରେ ଏକ ଡକ୍ୟୁମେଣ୍ଟାରୀ ଫିଲ୍ମ ତିଆରି କରିଛି। ସେ ହିନ୍ଦୀ ଚଳଚ୍ଚିତ୍ର "କୌନ କିତନେ ପାନି ମେଁ" ରେ ଏକ ଛୋଟ ଭୂମିକାରେ ମଧ୍ୟ ଅଭିନୟ କରିଥିଲେ। ପାଞ୍ଚ ଜଣ ଗବେଷକ ଛାତ୍ର ତାଙ୍କ କବିତା ଉପରେ ପିଏଚଡି ଲାଭ କରିଛନ୍ତି। ବିଶିଷ୍ଟ କବି ଗୁଲଜାର "ଏ ପୋଏମ୍ ଏ ଡେ" ନାମକ ନିଜ ଅନୁଦିତ ପୁସ୍ତକରେ 34ଟି ଭାରତୀୟ ଭାଷାର 279 ଜଣ କବିଙ୍କ ଦ୍ୱାରା ଲିଖିତ 365ଟି କବିତାର ଏକ ବ୍ୟାପକ ଏବଂ ଅନନ୍ୟ ସଂଗ୍ରହ ସଂକଳନ କରିଛନ୍ତି। କବିତାଗୁଡ଼ିର ଚୟନ ଏବଂ ଅନୁବାଦ (ହିନ୍ଦୀ ଏବଂ ଇଂରାଜୀରେ) ସେ ନିଜେ କରିଛନ୍ତି। ଗୁରୁତ୍ୱପୂର୍ଣ୍ଣ କଥା ହେଉଛି ଯେ ହଲଧର ନାଗଙ୍କ ଅନନ୍ୟ କବିତା **'ପାଞ୍ଚ ଅମୃତ'**କୁ ଗୁଲଜାର ନିଜ ପୁସ୍ତକର ପ୍ରଥମ ପୃଷ୍ଠା ରେ ସ୍ଥାନିତ କରିଛନ୍ତି। କବିତାଟି ହେଉଛି..

"ଅମରୁତ ଝରୁଂ / ସାତ ସମୁଦରୁଂ / ସରଗର ଜନହୁଁ / ମାଆଁର ଥନୁଂ / ମହତ ନିତିର ଧାରୁଂ / କବିର କଲମ ଗାରୁ"

ହଲଧର ନାଗଙ୍କ "ନାନା ପାଗଲ" ଶୀର୍ଷକ କବିତାର ଇଂରାଜୀ ଅନୁବାଦ "Holy Madness"କୁ ବିଶ୍ୱସ୍ତରୀୟ ପୁସ୍ତକ "Madness and an anthology of world poetry"ରେ ଅନ୍ତର୍ଭୁକ୍ତ କରାଯାଇଛି, ଯାହା ବିଶ୍ୱର ବିଭିନ୍ନ ଭାଷାରେ ଲିଖିତ ମାନସିକ ବିକାର ଉପରେ ଏକ କବିତା ସଂଗ୍ରହ। ଏହି ପୁସ୍ତକର ଉନ୍ମୋଚନ କାର୍ଯ୍ୟକ୍ରମରେ ହଲଧର ନାଗଙ୍କୁ କାଠମାଣ୍ଡୁରେ ସମ୍ମାନିତ କରାଯାଇଥିଲା।

ଲୋକକବି ରତ୍ନଙ୍କ ସରଳତା ତାଙ୍କର ସ୍ୱତନ୍ତ୍ର ପରିଚୟ। ଏପ୍ରିଲ 2016 ରେ, ତତ୍କାଳୀନ ରାଷ୍ଟ୍ରପତି ପ୍ରଣବ ମୁଖାର୍ଜୀଙ୍କ ଠାରୁ ପଦ୍ମଶ୍ରୀ ପୁରସ୍କାର ଗ୍ରହଣ କରିବାକୁ ରାଷ୍ଟ୍ରପତି ଭବନରେ ପହଞ୍ଚିଥିବାବେଳେ ବି ହଲଧର ନାଗ ଚପଲ ପିନ୍ଧି ନଥିଲେ। ଧଳା ଧୋତି, ଗାମୁଛା ଏବଂ ଗେଞ୍ଜି ପିନ୍ଧି ହଲଧର ନାଗ ରାଷ୍ଟ୍ରପତି ପ୍ରଣବ ମୁଖାର୍ଜୀଙ୍କ ଠାରୁ ପଦ୍ମଶ୍ରୀ ପୁରସ୍କାର ଗ୍ରହଣ କରିବାକୁ ପହଞ୍ଚିଥିଲେ ଖାଲି ପାଦରେ ଏବଂ ଦର୍ଶକମାନେ ତାଙ୍କ ସରଳତାରେ ମୁଗ୍ଧ ହୋଇଥିଲେ। ଏହା ଏକ ଏପରି ଘଟଣା ଥିଲା ଯାହା ଜନସାଧାରଣଙ୍କୁ ବିଶ୍ୱାସ କରାଇଲା ଯେ ସମ୍ମାନ ଏବଂ ପ୍ରତିଭା କୌଣସି ବିଶ୍ୱବିଦ୍ୟାଳୟ କିମ୍ବା ଅର୍ଥନୀତିର ଅଧୀନ ନୁହେଁ। ଆଜି ମଧ୍ୟ, ଆମ ସଂସ୍କୃତି ଏପରି ବ୍ୟକ୍ତିମାନଙ୍କ ଦ୍ୱାରା ପରିଚାଳିତ ହେଉଅଛି ଯେଉଁମାନେ ବିଳାସିତା ବିପରିତ ସମୃଦ୍ଧ ଜୀବନଶୈଳୀର ସମର୍ଥନ କରନ୍ତି।

ଅବସରପ୍ରାପ୍ତ ମୁଖ୍ୟ ପ୍ରବନ୍ଧକ

ପଞ୍ଜାବ ଏଣ୍ଡ ସିନ୍ଧ ବ୍ୟାଙ୍କ

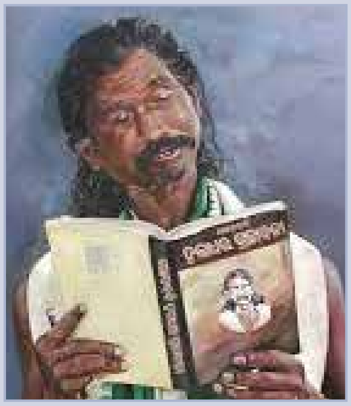

लोककवि रत्न पद्मश्री डॉ. हलधर नाग

(मूल ओड़िआ लेख का हिंदी अनुवाद)

जन्मदिवस विशेष

कवि प्रतिभा और कल्पना के अनोखे व्यक्तित्व का दूसरा नाम है कवि हलधर नाग। पूरे पश्चिमी ओड़िशा में लोक कविरत्न के नाम से जाने जाने वाले यह कवि हमारे समय के एक महान अजूबे हैं। ऐसे समय में जब कविता पढ़ने वाले बहुत कम हो गए हैं, कवि हलधर की कविता सुनने के लिए हजारों लोग मंच के सामने उनका इंतजार करते हैं। उनकी सभी कविताएं आज भी उन्हें कंठस्थ हैं। बिना तैयारी किए घंटों तक वे कविताओं का पाठ करते हैं। आज पश्चिमी ओड़िशा में कोई भी कार्यक्रम उन्हें बुलाए बिना पूरा नहीं होता। ओड़िशा में लोक-कवि रत्न के नाम से प्रसिद्ध हलधर नाग का जन्म **31 मार्च, 1950** में बरगढ़ जिले के घेंस गांव में हुआ था। घेंस पश्चिमी ओडिशा का एक ऐतिहासिक गांव है। बीर सुरेंद्र साय के नेतृत्व में ब्रिटिश राज के खिलाफ हथियारबंद आंदोलन की यह पवित्र भूमि है। घेंस गांव में किसी ने कभी सोचा भी नहीं होगा कि ऐसे किसी एतिहासिक गांव का बहुत ही साधारण-सा एक लड़का कोई असाधारण-सा इतिहास रच देगा। दस साल की उम्र में माता-पिता को खोने के बाद अपनी प्राथमिक शिक्षा के दौरान ही उनका विद्यालय छूट गया। वे कहते हैं कि उन्होंने सिर्फ ढाई क्लास तक पढ़ाई की है। तीसरी पूरी नहीं कर पाए थे कि अनाथ हो गए। एक हलवाई की दुकान में बर्तन धोए, फिर घेंस उच्च विद्यालय के एक छात्रावास में उन्हें खाना बनाने का काम मिला। कुछ दिनों बाद उन्होंने स्कूल के बाहर एक छोटे से खोखे में घुघनी और कागज-कलम बेचना शुरू कर दिया। उन दिनों बच्चे अपने कलम में दस पैसे की स्याही भरते थे। उन्होंने मालती से शादी की। उनकी बेटी हुई, जिसका नाम नंदिनी रखा।

कहते हैं कि इंसान के अंदर की कला और रचनात्मकता ज़्यादा दिन तक छिपी नहीं रहती। हलधर के मामले में भी ऐसा ही हुआ। हलधर एक आम इंसान ही तो हैं, कोई बहुत ज़्यादा पढ़े-लिखे भाषाविद नहीं। तीसरी जमात की पढ़ाई भी पूरी नहीं कर पाए थे। गांव के माहौल पर आधारित वे एक बहुत ही आम इंसान की तरह अपनी भावनाओं को अनोखी कल्पना से कविता का रूप देने लगे। कविता का उनका यह सफ़र 1990 में लिखी उनकी पहली कविता "धोड़ो बरगछ" (बूढ़ा बरगद) से शुरू हुआ। बाद में उन्होंने कई कविता-संग्रह लिखे। उनकी बीस से अधिक महाकाव्यों में 'अछिआ', 'बछर', 'महासती उर्मिला', 'तारा मंदोदरी', 'सिरी समलाई', 'प्रेम पाइच्छन', 'बीर सुरेंद्र साए', 'संथकवि भीमभोई', 'ऋषिकवि गंगाधर' शामिल हैं। कटक के फ्रेंड्स पब्लिकेशन्स द्वारा "हलधर ग्रंथावली" के नाम से प्रकाशित पहले संग्रह में इनमें से कई कविताएं प्रकाशित हो चुकी हैं। बाद में इनकी कविताओं को संबलपुर यूनिवर्सिटी ने प्रकाशित किया।

हलधर को बचपन से ही लोकगीतों और लोकनृत्य में बहुत रुचि थी। रामायण और महाभारत सुनकर, डालखाई, रसरकेलि गुनगुनाते हुए उन्होंने अपनी कविता की यात्रा शुरू की। कविता की सरस्वती ने अल्प-शिक्षित इस युवक के मन और हृदय को अपना निवास स्थान बना लिया। वेदव्यास, वाल्मीकि, गंगाधर मेहर और भीमभोई उनकी प्रेरणा स्रोत हैं। उनकी काव्य रचना यह साबित करती है कि कविता का प्रवाह हमेशा स्वाभाविक होता है और कविता लिखने के लिए किसी बौद्धिक प्रयास की आवश्यकता नहीं होती है। उनकी कविता में पश्चिमी ओड़िशा की जीवन-शैली, प्राकृतिक परिवेश, रीति-रिवाज, परंपराएं, लोकगीतों और लोकनृत्यों के छंद और सबसे बढ़कर ज़िंदगी की स्वच्छंदता दिखती है। कविता की विषय-वस्तु चाहे उन्होंने विभिन्न काव्यों और पुराणों से ली हो लेकिन उन्हें वर्णन और सृजन करने की शैली उनकी अनूठी है। क्षेत्रीय अस्मिता को बढ़ावा

देने वाले हलधर नाग अब पूरे पश्चिमी ओडिशा में लोक संस्कृति के अग्रणी बन गए हैं। उनकी कविता क्षेत्रीय संस्कृति की जीती-जागती निशानी है।

पश्चिमी ओड़िशा की चर्चा खास तौर पर वहाँ की गरीबी, भूखमरी, दादन मजदूरी और बच्चों की तस्करी के लिए होती है इसलिए जो लोग यहाँ कविता लिखते हैं या इस इलाके में रहते हैं उनके लिए कविता का विषय लगभग पूर्व-निर्धारित है। चाहे वर्तमान स्थिति के खिलाफ विरोध प्रदर्शन हो या किसी नए आंदोलन का संकेत, कविता अपनी छाप अवश्य छोड़ती है। हालांकि आधुनिक ओड़िआ कविता की अस्पष्ट, रहस्यमयी और दुर्बोध्य परंपरा में इन लहजों का कोई खास मतलब नहीं रह जाता। परंपरा की मुख्य धारा में अक्सर मूल स्रोत की भावनाएं कमज़ोर हो जाती हैं।

सौभाग्यवश हलधर नाग की कविता का यह बुरा हश्र नहीं हुआ। उनकी कविता ज़्यादातर पौराणिक कथाओं, कविता और कल्पना पर आधारित हैं इसलिए आधुनिकता या आधुनिकोत्तरता की व्यूह में भटके उन आलोचकों को उनकी कविता पारंपरिक या पुराने ज़माने की लग सकती है लेकिन अगर हम उनकी कविता को थोड़ा और गहराई से देखें तो एक बात स्पष्ट हो जाती है कि उनकी कल्पना, विद्रोह का छिपा हुआ एक हथियार है। शोषण और उपेक्षा के आदी इस इलाके की ज़िंदगी में हलचल पैदा करने के लिए पौराणिक कल्पना को आधार बनाने के अलावा कोई और रास्ता नहीं है। सारला दास, भीम भोई, गंगाधर मेहर की तरह जिन्होंने पौराणिक कल्पना के आधार पर अपनी राष्ट्रीय पहचान बनाने की काव्यात्मक कोशिशें कीं, हलधर नाग ने भी उन्हीं विषय-वस्तु और शैली को ही चुना। उनके वर्णन में पश्चिमी ओड़िशा की जीती-जागती तस्वीर एक चलचित्र की तरह पाठकों की आँखों के सामने तैरती है। उनकी कल्पना शक्ति को अन्य क्लासिक कवियों से कमतर नहीं आंका जा सकता है।

पारंपरिक शिक्षा से वंचित हलधर नाग की कविता की भाषा उनकी मातृभाषा कोशली (संबलपुरी) है। एक उप भाषा के रूप में गिनी जाने वाली भाषा कोशली में हलधर नाग की कविताओं ने जिन बौद्धिक ऊंचाइयों से रू-बरू कराया है, वह उस भाषा की उत्कृष्टता और मौलिकता का परिचायक है। कविता की रचना उस भाषा के आकर्षण और मौलिकता का संकेत होता है। अगर ओड़िआ भाषा के साथ कोशली की इस प्रतिष्ठा को नकारात्मक रूप से नहीं देखा जाए तो ओड़िआ साहित्य और भी समृद्ध होगा। पश्चिमी ओड़िशा के कई युवा कवि अब हलधर की शैली की नकल कर रहे हैं। उनके अनोखे अंदाज को "हलधर धारा" के नाम से जाना जाता है। अपने गानों और कविताओं के ज़रिए हलधर ने हमेशा दलितों और दीन-दुखियों के लिए लड़ाई लड़ी है। इसी तरह उन्होंने संबलपुरी-कोशली भाषा की लड़ाई में भी अहम भूमिका निभाई है।

कवि हलधर की कविता की सबसे खास बात उनकी भाषा के इस्तेमाल की अनोखी सहजता है। उनकी कविता पुराणों में वर्णित वेदव्यास जी के कथन और गणेश जी की श्रुत-लेखन जैसी है। हलधर की कविता में बोधगम्यता का तनिक भी अभाव या जटिलता नहीं है। उनकी मासूमियत की तरह उनकी कविता का निवेदन भी मासूम और रसमय है। पश्चिमी ओडिशा की प्राकृतिक सुंदरता, जीवन के रीति-रिवाज, तौर-तरीके, परंपराएं और सांस्कृतिक सुंदरता और भारतीय आध्यात्मिकता का सरल प्रस्तुतिकरण उनकी लेखनी की सबसे बड़ी उपलब्धि है। उनकी कविताओं में बेहतरीन हास्य और तीखे व्यंग्य होते हैं। आज हलधर नाग किसी पहचान के मोहताज नहीं हैं। हलधर नाग को 2016 में पद्म श्री से सम्मानित किया गया था। केंद्रीय साहित्य अकादमी ने हलधर नाग को गैर-मान्यता प्राप्त कोशली भाषा में लिखित उनकी रचनाओं के लिए 2017 में "भाषा सम्मान" से पुरस्कृत किया।

सम्बलपुर विश्वविद्यालय, कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय तथा इग्नू ने उनकी कविताओं के संकलन को 'हलधर साहित्य' के रूप में पाठ्यक्रम का एक हिस्सा बनाया है। बीबीसी ने उन पर एक डाक्यूमेंट्री फिल्म बनाई है। हिंदी फिल्म 'कौन कितने पानी में' में उन्होंने एक छोटी भूमिका भी निभाई है। पाँच शोध छात्रों ने उनकी कविताओं पर पीएचडी की है। 34 भारतीय भाषाओं के 279 कवियों की 365 कविताओं के एक विस्तृत और अनूठे संग्रह को गुलजार जी ने "अ पोएम अ डे" शीर्षक पुस्तक में संकलित किया। कविताओं का चयन और अनुवाद (हिंदी और अंग्रेजी में) स्वयं गुलजार जी ने किया है। खास बात यह है कि हलधर नाग की "पाँच अमृत" शीर्षक निम्नलिखित कविता को उन्होंने किताब के पहले पृष्ठ पर जगह दी है।

शेष अंश पृष्ठ संख्या 41 पर

शाखा शुभारंभ

अपनी भौतिक उपस्थिति का विस्तार करते हुए एयरपोर्ट रोड, मोहाली में पंजाब एण्ड सिंध बैंक की नवीन शाखा का शुभारंभ 11 फरवरी, 2026 को बैंक के प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी श्री स्वरूप कुमार साहा के कर कमलों से किया गया। तेजी से विकसित हो रहे वाणिज्यिक और आवासीय कॉरिडोर में स्थित यह शाखा खुदरा ग्राहकों, एमएसएमई और उभरते व्यावसायिक क्षेत्रों को सेवा प्रदान करेगी। इस अवसर पर मुख्य महाप्रबंधक श्री राजेश सी पांडे, क्षेत्र महाप्रबंधक चंडीगढ़ श्री चमन लाल शींहमार, महाप्रबंधक श्री मनोज कुमार, आंचलिक प्रबंधक चंडीगढ़ श्री कुलदीप सिंह और अन्य उच्चाधिकारी उपस्थित रहे।

आलेख एवं साक्ष्य उप समिति का चेन्नै दौरा

कोल्लम शाखा

एर्णाकुलम शाखा

संसदीय राजभाषा समिति की आलेख एवं साक्ष्य उप समिति द्वारा जनवरी, 2026 माह में कोच्ची तथा आसपास स्थित अन्य नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति व उनके सदस्य कार्यालयों का राजभाषा संबंधी निरीक्षण किया गया। इस क्रम में 05 जनवरी, 2026 को नराकास कोल्लम के अंतर्गत हमारी कोल्लम शाखा का तथा 06 जनवरी, 2026 को नराकास कोच्ची के अंतर्गत हमारी एर्णाकुलम शाखा का राजभाषा संबंधी निरीक्षण संपन्न हुआ। निरीक्षण बैठक में शाखा प्रभारी कोल्लम श्रीमती धन्या वी एल, शाखा प्रभारी एर्णाकुलम श्री राकेश जुनघरे तथा आंचलिक कार्यालय चेन्नै में पदस्थ वरिष्ठ प्रबंधक (राजभाषा) सुश्री मनीषा खटीक ने बैंक का प्रतिनिधित्व किया।

हिंदी एवं भारतीय भाषाओं का सह संबंध

विपिन कुमार

"कोस कोस पर बदले पानी, चार कोस पर बदले बानी", यह कहावत भारत की विविधता पर सटीक बैठती है। भौगोलिक एवं सांस्कृतिक विरासत से भरपूर मेरा देश भारत, विविधताओं का देश है। यहाँ कुछ ही दूरी पर जहां पानी का स्वाद अपनी पहचान बदलता है, वहीं भाषाई विविधता भी देश की एक विशेष पहचान है। भारत के संविधान की आठवी सूची में भले ही बाईस भाषाओं को मान्यता प्राप्त है परंतु बोलियों की संख्या यहाँ सैंकड़ों मे है। इन सभी भाषाओं और बलियों में हिंदी का अपना एक विशेष स्थान और महत्व है। इसका एक कारण हिंदी की बहुतायत से स्वीकारोक्ति भी है। देश की अन्य भाषाओं से हिंदी का गहरा सामाजिक, सांस्कृतिक, एतिहासिक, साहित्यिक, राजनीतिक और भूगोलीय संबंध स्थापित है।

हिंदी भाषा का उद्भव : वैसे तो संस्कृत से देश की कई भाषाओं का उद्भव हुआ है। हिंदी भाषा का उद्भव मूलतः संस्कृत से अपभ्रंश भाषाओ के माध्यम से हुआ है। इसका इतिहास हजारों साल पुराना है। समय के साथ-साथ हिंदी का विकास आदिकाल, मध्यकाल तथा फिर आधुनिक काल में होता आया है। हर काल में समय के साथ इसके कई रूप विकसित हुए हैं, जैसे ब्रज, अवधि और खड़ी बोली आदि। आज हिंदी भले ही भारत देश की राजभाषा है परंतु अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी हिंदी का बहुतायत से प्रसार हो रहा है।

हिंदी देश की सभी भाषाओं को जोड़ने वाली एक महत्वपूर्ण कड़ी है। यह सबसे अधिक बोलने वाली भाषा है इसलिए इसका महत्व और भी अधिक बढ़ जाता है। हिंदी को राजभाषा का दर्जा देकर भारतीय संविधान ने भारत की सभी भाषाओं के बीच एक सेतु का कार्य किया है। हिंदी का भारत की अन्य भाषाओं से संबंध देश की अखंडता और

एकता बढ़ाने में अभूतपूर्व योगदान देता है। हिंदी पूरे देश में संचार और आपसी सहयोग बढ़ाने में एक सशक्त माध्यम का कार्य करती है जिससे विभिन्न भाषाई और सांस्कृतिक पृष्ठभूमि के लोग एक-दूसरे की भावनाओं को अच्छी तरह से साझा कर सकते हैं। भारत की विविधता को अग्रणी रखकर हिंदी का विकास भारतीय भाषाओं के साथ अच्छा समन्वय स्थापित करके एक मजबूत राष्ट्र बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। हिंदी एक संपर्क भाषा होने के कारण हिंदीतर भाषाओं में संवाद स्थापित करने में मदद करती है। हिंदी से लोगों में आपसी भाईचारा और समझ बढ़ती है।

हिंदी भाषा का साहित्यिक सह संबंध उसके साहित्यिक इतिहास से है। इसके प्रारंभ से खड़ी बोली तक के विकास तक भाषा और साहित्य का बंधन अटूट दिखाई पड़ता है। भाषा किसी भी अभिव्यक्ति का मुख्य आधार होता है। भाषा के बिना किसी साहित्य की परिकल्पना

नहीं की जा सकती। भाषा के विकास के साथ ही साथ साहित्य का भी विकास होता है। हिंदी भाषा का साहित्यिक संबंध, उसके विचार, विकास, विस्तार और उसकी सांस्कृतिक भूमिका में निहित है। हिंदी विचारों की अभिव्यक्ति का प्रमुख माध्यम भी है। हिंदी भाषा और साहित्य ने समाज को जागरूक तो किया ही है, साथ ही साथ राष्ट्रीय एकता में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। भारतीय साहित्य की सबसे बड़ी विशेषता उसका राष्ट्रीय स्वरूप है। साहित्य के पुराने लेखकों जैसे संत कबीर, सूरदास, तुलसीदास आदि की रचनाएं अपने मूल रूप से दूसरी भाषाओं में भी अनुवादित की गई जिससे हिंदी राष्ट्रीय चेतना का स्रोत बनी। इसी प्रकार आधुनिक काल के रचनाकारों जैसे सुभद्रा कुमारी चौहान, प्रेमचंद, जय शंकर प्रसाद आदि ने भी अन्य भाषाओं को प्रभावित और प्रेरित किया।

हिंदी से अन्य भारतीय भाषाओ का सह संबंध

वैसे तो संस्कृत को सभी भारतीय भाषाओं की जननी कहा जाता है। हिंदी में प्रयोग होने वाले अधिकतर शब्द संस्कृत से आए तत्सम और तद्भव रूप ही हैं। हिंदी की व्याकरण संस्कृत से ही ली गई है। संस्कृत, हिंदी की प्रत्यक्ष पूर्वज भाषा है। समय और परिस्थिति के अनुसार संस्कृत से ही हिंदी का विस्तार हुआ है। इसके बाद उर्दू की बात करते हैं। बोलने मे लगभग समान सी लगने वाली उर्दू का हिंदी के समान ही सांस्कृतिक महत्व है। हालाँकि उर्दू ने अधिकतर शब्द, अरबी और फारसी से लिए हैं परंतु भारतीय संस्कृति में हिंदी और उर्दू दोनों ही भाषाओ ने खड़ी बोली को ही आधार बना कर रखा। जिस कारण से दोनों ही भाषाएं परस्पर समझी जा सकती हैं और एक-दूसरे से बोलने मे काफी मेल भी खाती हैं। गुजराती भाषा भी मूलतः संस्कृत से ही निकली भाषा है। गुजरात की साहित्यिक परंपराओं मे भी काफी हद तक हिंदी से निकटता दिखाई पड़ती है। आगे, गुजराती की तरह मराठी भाषा का मूल भी संस्कृत ही है। मराठी भाषा के शब्दों, व्याकरण और उच्चारण में भी हिंदी से निकटता दिखाई पड़ती है।

हिंदी और मैथिली भाषा में गहरा भाषाई संबंध है। दोनों ही हिन्द आर्य भाषा परिवार की सदस्य हैं। इनकी उत्पत्ति मगधी प्राकृत से हुई है। मैथिली भाषा को बिहारी भाषाओं के समूह की एक स्वतंत्र भाषा माना जाता है। हिंदी और मैथिली दोनों भाषाओं का स्रोत मागधी अपभ्रंश है। वैसे तो मैथिली की अधिकतर शब्दावली हिंदी से ली गई है फिर भी मैथिली हिंदी से अलग एक स्वतंत्र भाषा है। पारंपरिक रूप से भी मैथिली को कैथी लिपि मे लिखा जाता था परंतु अब ये देवनागरी मे भी लिखी जाती है। इसीलिए मैथिली, हिंदी की कोई बोली न होकर हिंदी से काफी घनिष्ठ संबंध रखने वाली एक स्वतंत्र भाषा है। यह भारतीय संविधान की आठवीं अनुसूची मे सम्मिलित एक मान्यता प्राप्त भाषा है जिसे अपनी एक साहित्यिक परंपरा और पहचान प्राप्त है।

भारत के पूर्वी भाग की भाषाओं का उद्भव और विकास भी संस्कृत से ही हुआ। विशेष रूप से हिंदी और बांग्ला भाषा। दोनों आर्यन भाषाएं हैं। दोनों मे कई व्याकरणीय और शाब्दिक समानताएं हैं। हालांकि दोनों की लिपियां अलग-अलग हैं परंतु मूल भाषा दोनों की ही संस्कृत होने के कारण दोनों मे कुछ शब्द सामान्य पाए गए हैं। दोनों भाषाओं की समृद्ध साहित्यिक परम्पराएं है। हिंदी और असमिया भाषा का वैसे तो कोई एतिहासिक या विकासात्मक संबंध नहीं है परंतु दोनों भाषाएं एक ही हिन्द आर्यन परिवार का हिस्सा हैं। असमिया पूर्वोत्तर की प्रमुख भाषा है। इसका उद्भव भी मागधी अपभ्रंश से ही हुआ है जो कि प्राचीन पूर्वी भारत मे बोली जाने वाली एक भाषा थी। संस्कृत, पालि और प्राकृत भाषाओं ने अपने वर्तमान स्वरूप को प्राप्त किया है। इसके अतिरिक्त बोड़ो (आसाम), मैतेई (मणिपुर), मिजो (मिजोरम), नागामीज (नागालैंड), गारो व खासी (मेघालय), कॉकबोरोक (त्रिपुरा) आदि भाषाएं भी पूर्वोत्तर की स्वदेशी भाषाएं हैं। इन क्षेत्रों में भी हिंदी व्यापार और संचार का एक महत्वपूर्ण साधन बनती जा रही है। हालांकि पूर्वोत्तर के अधिकांश राज्यों में हिंदी बोलने वालों का प्रतिशत कम है, खासकर अरुणाचल प्रदेश, नागालैंड, त्रिपुरा, सिक्किम और मिजोरम में, फिर भी हिंदी का अपना स्थान है। भारत के दक्षिण भाग में मुख्य रूप से चार भाषाएं बोली जाती हैं- तमिल, तेलुगु, कन्नड़ और मलयालम। ये सभी भाषाएं द्रविड़ भाषाएं हैं। वैसे तो हिंदी का द्रविड़ भाषाओं से कोई सीधा संबंध नहीं है परंतु आर्थिक और सामाजिक रूप में शहरों और व्यापारिक केंद्रों में हिंदी जानने वालों की संख्या बढ़ रही है। दक्षिण भारत में भले ही हिंदी कम प्रयोग की जाती है परंतु संपर्क भाषा के रूप में इसका प्रयोग धीरे-धीरे बढ़ रहा है। भारतीय एकता के प्रतीक के रूप में और संवाद स्थापित करने के लिए हिंदी को एक महत्वपूर्ण भूमिका में देखा जाता है।

हिंदी और पंजाबी दोनों ही भाषाएं अपनी सांस्कृतिक विरासतें साझा करतीं हैं। हिंदी की लिपि देवनागरी है जबकि पंजाबी गुरु मुखी में है। दोनों भाषाओं की मूल व्याकरणिक संरचना काफी हद तक समान है। दोनों भाषाएं एक ही हिन्द आर्यन भाषा परिवार से हैं। दोनों भाषाओं

की मूल शब्दावली मिलती-जुलती है। ऐतिहासिक रूप से भी पंजाब की हिंदी भाषी क्षेत्र से निकटता रही है। हालांकि दोनों भाषाओं की जड़ें समान हैं परंतु उनकी शब्दावली और उच्चारण मे भिन्नता पाई जाती है। इसी कारण से कई बार हिंदी भाषियों को इसे समझने मे कठिनाई आती है। इसी प्रकार से उड़िया और हिंदी भी हिन्द आर्यन भाषा परिवार से संबंध रखती हैं और इनकी जड़ें भी संस्कृत मे समाहित हैं। दोनों भाषाओं की वाक्य रचना और शब्दावली मे भी समानता पाई जाती है। हालांकि इसे बोलने का तरीका इसे हिंदी से अलग भी करता है।

भारतीय संविधान ने हिंदी को राजभाषा के रूप मे स्वीकार किया है, जिसके कारण सरकारी कामकाज और राष्ट्रीय स्तर पर संचार और आसान हो गया है। इसके साथ ही देश की सभी भाषाओं के साथ भी एक सुंदर सामंजस्य स्थापित हुआ है। आज के व्यस्त युग में राजभाषा हिंदी के कारण चलचित्र मीडिया, सूचना प्रौद्योगिकी, सोशल मीडिया, इंटरनेट मीडिया, संचार मीडिया आदि के माध्यम से हिंदी का देश और विश्व की अन्य भाषाओं से संबंध और प्रगाढ़ हुआ है। देश के चलचित्र मे भी पारस्पर गीतों को पसंद किया जाता है। दक्षिण भारत के गीत हिंदी में सुने जाते हैं तो हिंदी के गीतों को भी दक्षिण भाषाई क्षेत्रों मे सुना जा रहा है। इससे दोनों क्षेत्रों के चलचित्र और साहित्य से लोग परिचित तो होते ही हैं, साथ नहीं साथ एक-दूसरे की संस्कृति भी आदान प्रदान होती है।

भारत विविधताओ का देश है। अनेकता में एकता यहाँ की पहचान है। यहाँ की अनेक भाषाएं नदी, नालों व नहरों की तरह है जो एक स्थान से निकालकर विशाल समुद्र में जाकर मिलती हैं। हिंदी उसी समुद्र की मुख्य धारा है जो बाकी नदियों को साथ लेकर चलती है और जहां-जहां से निकलती है, वहां-वहां से भारतीय संस्कृति को अभिसिंचित करते हुए निकलती है। इससे न केवल हिंदी और भारतीय भाषाओं में परस्पर संबंध व सहयोग गहरा होता है बल्कि राष्ट्रीय एकता भी सुद्दढ़ होती है। इसीलिए हिंदी का प्रचार और प्रसार देश की अखंडता और एकता के लिए अत्यंत आवश्यक है।

-अधिकारी

आंचलिक कार्यालय दिल्ली-1

कार्टून-कोना

प्रदीप कुमार रॉय
सेवानिवृत्त मुख्य प्रबंधक
पंजाब एण्ड सिंध बैंक

नराकास उपलब्धियां

बैंक के आंचलिक कार्यालय बरेली को बैंक नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (बैंक एवं बीमा कंपनी), बरेली द्वारा आयोजित वार्षिक राजभाषा शील्ड योजना-2025 के अंतर्गत द्वितीय पुरस्कार प्रदान किया गया। यह पुरस्कार, 15 जनवरी, 2026 को आयोजित नराकास की बैठक में नराकास अध्यक्ष श्री प्रतीक अग्निहोत्री के कर कमलों से मुख्य प्रबंधक श्री प्रेम प्रकाश तथा वरिष्ठ प्रबंधक (राजभाषा) श्री सुमन कुमार ने प्राप्त किया।

वर्ष 2024-25 के दौरान श्रेष्ठ राजभाषा कार्यान्वयन के लिए बैंक के आंचलिक कार्यालय नोएडा को नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (बैंक), नोएडा द्वारा प्रशासनिक संवर्ग श्रेणी में द्वितीय पुरस्कार से सम्मानित किया गया। 10 फरवरी, 2026 को आयोजित नराकास की छमाही बैठक में नराकास अध्यक्ष श्री अनुराग त्रिपाठी के कर कमलों से आंचलिक प्रबंधक श्री महेश सभरवाल तथा मुख्य प्रबंधक श्री गजेन्द्र कोठारी ने क्रमशः पुरस्कार तथा प्रमाण-पत्र ग्रहण किए।

ग्राहक दृष्टिकोण

सोनू कुमार उपाध्याय

ग्राहक किसी भी व्यापार या सेवा का सबसे महत्वपूर्ण अंग होता है। यह कहा जाता है कि ग्राहक भगवान के समान होता है क्योंकि उसके बिना किसी भी व्यवसाय का अस्तित्व संभव नहीं है। यदि हम ग्राहक के दृष्टिकोण से सोचें तो हमें यह समझ में आता है कि वह अपने पैसे के बदले केवल वस्तु या सेवा ही नहीं बल्कि सम्मान, ईमानदारी और संतोष भी चाहता है। कोई भी सामान्य ग्राहक रोजमर्रा की जरूरतों के लिए बाजार जाता है - कभी किराने की दुकान पर, कभी कपड़ों की दुकान पर तो कभी किसी सेवा केंद्र पर। जब वह किसी दुकान में प्रवेश करता है तो उसकी सबसे पहली अपेक्षा होती है कि उसके साथ सम्मानपूर्वक व्यवहार किया जाए। यदि कोई दुकानदार मुस्कुराकर उसका स्वागत करता है और उसकी जरूरतों को ध्यान से सुनता है तो ग्राहक को वहां अच्छा लगता है, वह दोबारा उसी दुकान पर जाना पसंद करता है लेकिन जब कोई दुकानदार रूखा व्यवहार करता है या उसकी बातों को प्राथमिकता नहीं देता है तो वहां से निराश होकर चला जाता है, यह सोचकर कि सामान्य परिस्थिति में वह फिर वहां नहीं जाएगा। आज के ग्राहक चाहते हैं कि उन्हें केवल एक संख्या के रूप में नहीं, बल्कि एक व्यक्ति के रूप में समझा जाए और उनकी पसंद के आधार पर सुझाव दिए जाएं।

ग्राहक के रूप में लोगों की दूसरी बड़ी अपेक्षा होती है - गुणवत्ता। वह जो भी वस्तु खरीदता है, उसके लिए अपनी मेहनत की कमाई खर्च करता है और इसलिए वह चाहता है कि उसे अच्छी गुणवत्ता वाली वस्तु मिले जो लंबे समय तक चले। यदि उसे खराब या नकली सामान मिलता है तो यह उसे अन्याय जैसा लगता है। कई बार ऐसा होता है कि दुकानदार ज्यादा मुनाफा कमाने के लिए ग्राहकों को गलत जानकारी देकर वस्तुएं बेच देते हैं। ऐसे अनुभव ग्राहक के विश्वास को तोड़ देते हैं। ग्राहक चाहते हैं कि उत्पाद उच्च गुणवत्ता का हो और वैसा ही प्रदर्शन करे जैसा वादा किया गया है। इसके अलावा, मूल्य भी एक महत्वपूर्ण पहलू है। एक ग्राहक हमेशा चाहता है कि उसे उचित कीमत पर वस्तु मिले। यदि किसी वस्तु की कीमत बहुत अधिक हो तो वह उसे खरीदने से पहले कई बार सोचता है। दूसरी ओर यदि उसे उचित कीमत पर अच्छी गुणवत्ता की वस्तु मिलती है तो वह संतुष्ट होता है और उस दुकान की प्रशंसा करता है। आज के समय में ग्राहक पहले से ज्यादा जागरूक हो गया है। वह ऑन-लाइन और ऑफलाइन दोनों जगहों पर कीमतों की तुलना करता है, इसके बाद निर्णय लेता है। ग्राहक जटिल प्रक्रियाओं के बजाय आसान और परेशानी मुक्त खरीदारी अनुभव चाहते हैं। ग्राहक के रूप में किसी व्यक्ति की एक और अपेक्षा है – सही जानकारी और पारदर्शिता। जब वह कोई वस्तु खरीदता है तो उसके बारे में पूरी जानकारी जैसे उसकी विशेषताएं, उपयोग, गारंटी और वारंटी इत्यादि जानना चाहता है। यदि दुकानदार ग्राहक को सही और स्पष्ट जानकारी देता है तो उसका भरोसा बढ़ता है। लेकिन यदि विक्रेता जानकारी छिपाता है या गलत जानकारी देता है तो ग्राहक स्वयं को ठगा हुआ महसूस करता है।

आज के समय में सेवाओं का महत्व भी बहुत बढ़ गया है। चाहे वह बैंकिंग सेवा ही, मोबाइल सेवा हो या किसी ऑन-लाइन प्लेटफॉर्म की सेवा। ग्राहक हर मंच पर अच्छी सेवा की उम्मीद करता है। यदि किसी समस्या के समय ग्राहक सेवा प्रतिनिधि तुरंत और प्रभावी सहायता देता है तो ग्राहक संतुष्ट होता है लेकिन यदि उसकी समस्या को नजरअंदाज किया जाता है या समाधान में देरी होती है तो वह असंतुष्ट हो जाता है और अन्य विकल्प की खोज में चल पड़ता है। समस्या होने पर ग्राहक तेजी से समाधान और सक्रिय संचार की उम्मीद करते हैं। ग्राहक के रूप में सामान्य जन को कभी-कभी कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है, जैसे - लंबी कतारें, खराब व्यवहार, गलत बिलिंग या फिर रिटर्न और एक्सचेंज में परेशानी। कई बार दुकानदार या सेवा प्रदाता अपनी जिम्मेदारी से बचने की कोशिश करते है जिससे ग्राहक को मानसिक और आर्थिक दोनों प्रकार का नुकसान होता है। ऐसे अनुभव ग्राहक के मन में संगठन के प्रति नकारात्मक छवि बना देते हैं।

ग्राहक के अधिकार भी होते हैं जिनका संरक्षण आवश्यक है। हर ग्राहक को संरक्षण का अधिकार और शिकायत करने का अधिकार होता है। यदि किसी ग्राहक के साथ अन्याय होता है तो वह उपभोक्ता फोरम का रुख कर सकता है। ग्राहकों को जागरूक करने के लिए शासन की ओर से अनेक अभियान चलाया जाता है जिससे ग्राहक अपने अधिकारों के प्रति सचेत हो सके। कुल मिलाकर यही निष्कर्ष प्राप्त होता है कि व्यापार और सेवा का आधार विश्वास होता है। यदि कोई व्यापारी या सेवा प्रदाता ग्राहकों के साथ ईमानदारी और सम्मान से व्यवहार करता है तो वह लंबे समय तक सफलता प्राप्त कर सकता है। जब कोई संस्थान उनकी अपेक्षाओं को पूरा करता है तो ग्राहक संतुष्ट होते हैं और संस्था के प्रति निष्ठावान बनते हैं। ग्राहक केवल वस्तु नहीं खरीदता, वह एक अनुभव भी खरीदता है। यदि अनुभव अच्छा होता है तो वह बार-बार उसी स्थान पर जाता है और दूसरी को उस स्थान से सेवाएं लेने की सिफारिश करता है। इस प्रकार ग्राहक के दृष्टिकोण को समझना प्रत्येक व्यवसाय के लिए आवश्यक है। जब ग्राहक संतुष्ट होगा तभी व्यापार भी प्रगति करेगा इसलिए यह जरूरी है कि हर व्यापारी चाहे वह व्यक्ति हो या संस्था, ग्राहक को महत्व दे और उनकी अपेक्षाओं को पूरा करने का प्रयास करें।

-अधिकारी
शाखा बोकारो, झारखंड

पृष्ठ संख्या 33 का शेष अंश

"अमृत झरे/ सात समंदर से/ आसमान के चाँद से/ माँ की छाती से/ महत नीतियों के प्रवाह से/ कवि की कलम की रेखा से"

विश्व के विभिन्न भाषा में मानसिक विकार पर लिखी कविता संग्रह "Madness and an anthology of world poetry" जैसी विश्वस्तरीय पुस्तक में हलधर नाग की कविता "नाना पागल" के अंग्रेजी अनुवाद "Holy Madness" को शामिल किया गया है। काठमांडु में आयोजित पुस्तक के विमोचन कार्यक्रम में हलधर नाग को सम्मानित किया गया था। लोक-कवि रत्न की सादगी उनकी अपनी विशेष पहचान है। अप्रैल, 2016 में तत्कालीन राष्ट्रपति प्रणव मुखर्जी से पद्म श्री पुरस्कार ग्रहण करने राष्ट्रपति भवन पहुंचे हलधर नाग ने तब भी चप्पल नहीं पहनी थी। सफ़ेद धोती, गमछा और बनियान पहने हलधर नाग जब नंगे पांव राष्ट्रपति प्रणव मुखर्जी से 'पद्मश्री पुरस्कार' ग्रहण करने पहुंचे तो सभागार में उपस्थित लोग उनकी सादगी के कायल हो गए। यह एक ऐसी घटना थी जहां से आमजन को विश्वास होने लगा कि सम्मान और प्रतिभा किसी विश्वविद्यालय या अर्थतंत्र के अधीन नहीं होती। आज भी ऐसे लोग हमारी संस्कृति का नेतृत्व कर रहे हैं जो विलासिता के विपरित समृद्ध जीवन-शैली के प्रबल पैरोकार हैं।

-प्रदीप कुमार रॉय
सेवानिवृत्त मुख्य प्रबंधक

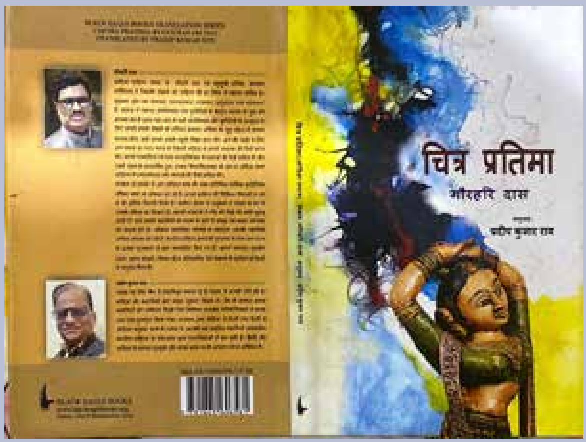

श्री प्रदीप कुमार राय, पंजाब एण्ड सिंध बैंक के सेवानिवृत्त अधिकारी है। इनकी मातृभाषा ओड़िआ होने के बावजूद हिंदी कविता और हिंदी कहानी लेखन में इनकी विशेष रुचि है। ओड़िआ के अतिरिक्त हिंदी, अंग्रेजी, बांग्ला और पंजाबी भाषाओं में इनकी पकड़ है। विभिन्न भाषाओं का ज्ञान होने के कारण ये अनुवाद-कार्य भी करते हैं। इनकी मौलिक कहानियाँ विभिन्न पत्रिकाओं में प्रकाशित होती रही है जबकि समकालीन भारतीय साहित्य, वागार्थ, पाखी, नई धारा, वीणा, मधुमती, नांदी जैसी प्रतिष्ठित पत्रिकाओं में ओड़िआ से हिंदी में अनूदित कहानियां प्रकाशित हुई हैं। **लेखन के साथ ही कार्टून विधा में ये पारंगत हैं।**

कन्याकुमारी

-यात्रा संस्मरण

सुदेश कुमार

वैसे तो बचपन से ही मेरी दिली इच्छा थी कि मैं भारत भूमि के मुख्य हिस्से के अंतिम छोर अर्थात कन्याकुमारी घूमने जाऊं किंतु मेरी कन्याकुमारी घूमने की प्रबल इच्छा सन् 2009 में पूर्ण हुई जब मैंने अपने माता-पिता एवं अपनी पत्नी के साथ दक्षिण भारत के इस महत्वपूर्ण हिस्से में घूमने की योजना बनाई। अगर आपको कोई तटीय क्षेत्र घूमना हो तो सर्दी का मौसम सर्वश्रेष्ठ है। जब सारा उत्तर ठंड से ठिठुर रहा होता है, दक्षिण के तटीय क्षेत्र उस समय एक खूबसूरत गुनगुने मौसम का आनंद प्रदान करते हैं। तो हमने योजना बनाई नवंबर के महीने में घूमने की और दिल्ली से तिरुवनंतपुरम जाने वाली राजधानी एक्सप्रेस में अपने टिकट बुक कर लिए। दिल्ली में मौसम उस समय बहुत ठंडा था, फिर भी मैंने सभी को कह दिया था कि गर्म कपड़े ज्यादा लेने की आवश्यकता नहीं है। मेरे माता-पिता मेरे इस सुझाव से बहुत आशंकित थे किंतु तिरुवनंतपुरम पहुंचकर उन्हें मौसम के अंतर का एहसास हुआ और उन्होंने मजबूरी में सभी गर्म कपड़े किनारे रख दिए। तिरुवनंतपुरम से हमने कन्याकुमारी के लिए एक लोकल ट्रेन पकड़ ली। तिरुवनंतपुरम से कन्याकुमारी की यात्रा के दौरान अत्यंत रमणीक और प्राकृतिक दृश्य देखने को मिले। हर तरफ नारियल और केले के वृक्षों की बहुतायत थी। कन्याकुमारी रेलवे स्टेशन से थोड़ी दूरी पर हमारा केंद्रीय लोक निर्माण विभाग का गेस्ट हाउस था जिसके पास ही कन्याकुमारी समुद्र तट स्थित है।

कन्याकुमारी का पुराना नाम "केप कोमोरिन" है जो तमिलनाडु राज्य में स्थित है। कन्याकुमारी भारत की मुख्य भूमि का दक्षिणतम स्थान है जो अरब सागर, बंगाल की खाड़ी और हिन्द महासागर की त्रिवेणी पर स्थित है। यहां पर ध्यान से देखने पर तीनों सागर मिलते हुए देखे जा सकते हैं। इस स्थान को "त्रिवेणी संगमम" कहा जाता है।

कन्याकुमारी नाम देवी कुमारी के नाम पर पड़ा है जो देवी पार्वती का अविवाहित स्वरूप है जिसको समर्पित कुमारी अम्मन मंदिर समुद्र-तट के पास ही स्थित है। भगवान शिव ने बाणासुर को किसी कुंवारी कन्या के अतिरिक्त अन्य किसी के हाथों से ना मरने का वरदान दिया था। देवी कुमारी भगवान शिव को पति स्वरूप में पूजती थीं और उनका विवाह भी निश्चित हो गया था किंतु नारद मुनि ने बाणासुर की मृत्यु सुनिश्चित करने के लिए भगवान शिव की बारात को विवाह स्थल तक पहुंचने से पूर्व ही रुकवा दिया और विवाह संपन्न नहीं हो पाया। बाद में देवी कुमारी ने बाणासुर का वध भी किया और उनके कन्याकुमारी स्वरूप की स्थापना हुई। कहा जाता है कि विवाह पूर्ण नहीं होने के कारण विवाह के लिए एकत्रित भोज्य-पदार्थ चावल और गेंहू के आकार के कंकड़-पत्थरों में परिवर्तित हो गए जो आज भी कन्याकुमारी के समुद्र-तट की रेत में देखे जा सकते हैं। सुबह स्नान करने के पश्चात हमने मंदिर जाकर कन्याकुमारी देवी के दर्शन

किए। उसके बाद मंदिर के पास ही स्थित एक रेस्टोरेंट में नाश्ता करने गए। मैंने सबको पहले ही बता दिया था कि पूरी यात्रा के दौरान कोई भी रोटी, परांठा या छोला-भटूरा नहीं मांगेगा बल्कि दक्षिण के लजीज डोसा, इडली, वडा, उत्तपम आदि का मज़ा उठाना है। सच कहूं तो कन्याकुमारी के स्तर का डोसा मुझे आज तक कहीं मिला नहीं।

नाश्ते के पश्चात हम विवेकानंद रॉक मेमोरियल के लिए निकल पड़े। मेमोरियल में जाने के लिए नाव से जाना पड़ता है। नाव पहले विवेकानंद रॉक मेमोरियल लेकर जाती है जहाँ पर हमने उस स्थान को देखा, जहाँ पर सन 1893 में स्वामी विवेकानंद ने विश्व धर्म सम्मेलन में भाग लेने जाने के लिए शिकागो प्रस्थान करने से पूर्व ध्यान लगाया था और भारत भूमि को नमन किया था। यहां पर एक बहुत ही अच्छा ध्यान केंद्र स्थित है जो 2024 के चुनाव परिणाम से पहले प्रधानमंत्री द्वारा ध्यान लगाने के कारण चर्चा में आया था। इसके अंदर लगातार ॐ का स्वर गुंजायमान होता रहता है जिससे मन को अत्यधिक शांति मिलती है। मेमोरियल के अंदर ही स्वामी विवेकानंद की शिक्षाओं और दर्शन को समर्पित एक पुस्तक दीर्घा है जहां पर स्वामी विवेकानंद के जीवन से जुड़ी घटनाओं, उनकी शिक्षाओं आदि पर आधारित काफी साहित्य उपलब्ध है। विवेकानंद रॉक मेमोरियल से कन्याकुमारी शहर काफी खूबसूरत दिखता है। हम वहां बहुत देर तक फोटो खिंचवाते रहे। उसके पश्चात नाव हमें संत तिरुवल्लुवर की मूर्ति पर ले गई। संत तिरुवल्लुवर की मूर्ति 133 फीट ऊंची है जो एक बड़ी चट्टान पर स्थित है। संत तिरुवल्लुवर एक विख्यात तमिल कवि और दार्शनिक थे जिन्होंने "तिरुक्कुरल" की रचना की। विवेकानंद रॉक मेमोरियल और संत तिरुवल्लुवर की प्रतिमा ये दोनों मिलकर कन्याकुमारी शहर का एक अनूठा परिदृश्य स्थापित करते हैं। शाम के समय जब इस प्रतिमा के चारों तरफ से बिजली की रोशनी जगमगाती है तो यह प्रतिमा बहुत खूबसूरत लगती है। कन्याकुमारी समुद्र-तट से थोड़ी दूरी पर एक वाटर पार्क है, हमने उसका भी आनन्द लिया। वाटर पार्क के प्रवेश द्वार पर ही एक मोम से बनी मूर्तियों की गैलरी भी थी जो लंदन की प्रसिद्ध मैडम तुसाद मोम गैलरी से प्रेरित है। इसमें प्रसिद्ध राजनेताओं, कलाकारों और समाज सेवियों की हूबहू दिखने वाली मूर्तियां हैं। इससे थोड़ी ही दूरी पर सूर्यास्त बिंदु है जो डूबते हुए सूर्य की खूबसूरत आभा को निहारने के लिए अत्यंत लोकप्रिय है।

शाम को हम वापस कन्याकुमारी मंदिर के पास स्थित गांधी स्मारक गए जहां सन् 1948 में गांधीजी की अस्थियाँ विसर्जित की गई थीं और वहाँ पर उनकी चिता की राख रखी हुई है। गांधी स्मारक के बगल में ही महान स्वतंत्रता सेनानी एवं तमिलनाडु के भूतपूर्व मुख्यमंत्री श्री के. कामराज का स्मारक है जिसे "कामराज मणिमंडपम" के नाम से जाना जाता है। उसके बाद हम नजदीक स्थित बाजार में घूमने के लिए आ गए जहां पर हमें अलग-अलग आकार के शंख, सीपियों की माला, नाम के प्रथम अक्षर गढ़े हुए सीपियों से बने चाभी-केस, मोतियों की माला आदि मिले जो हमने मोल-भाव करने के पश्चात थोड़े से खरीद लिए। चाय पीने में मेरी और अन्य लोगों की विशेष रुचि न थी क्योंकि दक्षिण भारत में कॉफी ज्यादा चलन में है और ज्यादातर दुकानदार चाय को भी कॉफी की तरह ही फेटकर बनाते हैं, उबालकर नहीं, जिसके कारण चाय में विशेष स्वाद नहीं होता। उसकी बजाय हम लोगों ने नारियल पानी पीना बेहतर समझा। मजे की बात तो यह थी कि वहाँ पर नारियल पानी का मूल्य दिल्ली के मूल्य के बराबर ही था जबकि चारों ओर नारियल ही नारियल थे। बाद में पता चला कि वहां पर उसी अनुपात में खपत भी है इसलिए रेट भी ज्यादा है। शाम को हमने भोजन किया और उसके पश्चात हम लोग बहुत देर तक समुद्र-तट पर चहलकदमी करते रहे जो एक यादगार और आनंददायक अनुभव था क्योंकि समुद्र की ओर से चलने वाली हवाएं और समुद्र की लहरों का गर्जन के साथ तट पर टकराने की ध्वनि एक अनोखे वातावरण का निर्माण कर रही थीं। उसके पश्चात हम गेस्ट हाउस में विश्राम करने के लिए चले गए।

शुचीन्द्रम और पद्मनाभपुरम पैलेस : अगले दिन हम कन्याकुमारी से बस पकड़कर शुचीन्द्रम चले गए जो कन्याकुमारी से लगभग 12 किलोमीटर दूर स्थित है। शुचीन्द्रम में 17वीं शताब्दी में स्थापित शक्तिपीठ है जो भारत के उन गिने-चुने मंदिरों में से एक है जहां "त्रिमूर्ति" अर्थात ब्रह्मा, विष्णु और शिव तीनों देवताओं की पूजा एक ही मंदिर में की जाती है। मंदिर का सफेद गोपुरम दूर से ही दिखाई देता है। मंदिर में स्थापित हनुमान जी की मूर्ति काफी आकर्षक है। मंदिर का प्रवेश द्वार हमें काफी सुंदर और आकर्षक लगा जिसमें सुंदर नक्काशी की गई थी। मंदिर से बाहर निकलते ही हमें एक केले की दुकान मिली जिसमें हमें अलग-अलग आकार के केले मिले जिसमें छोटे-छोटे केले जो उंगलियों के आकार के थे, काफी स्वादिष्ट और मीठे थे। दक्षिण भारतीय लोग केले के चिप्स भी बनाते हैं और कच्चे केले की सब्जी भी बनाते हैं। उसके बाद हम पद्मनाभपुरम पैलेस जो कि वहाँ से लगभग 19 किलोमीटर दूर था, की ओर चल पड़े। दरअसल, वर्तमान संपूर्ण केरल राज्य के साथ-साथ कन्याकुमारी भी पहले त्रावणकोर राज्य का हिस्सा थे। पद्मनाभपुरम पैलेस उसी त्रावणकोर राज्य की पूर्ववर्ती राजधानी थी। तमिलनाडु राज्य में स्थित होने के बावजूद इस महल का स्वामित्व और रख-रखाव का पूरा नियंत्रण केरल सरकार के पुरातत्व विभाग के पास है। यह महल एवं परिसर पारंपरिक केरल वास्तुकला का एक अद्वितीय नमूना है। यह लगभग 6.5 एकड़ क्षेत्रफल में फैला है तथा इसे एशिया के सबसे बड़े लकड़ी के महलों में से एक माना जाता है। इस महल का निर्माण सन् 1601 ई. में इरावी वर्मा के द्वारा किया गया था जिसका पुनर्निर्माण मार्तंड वर्मा के द्वारा सन् 1750 ई. में करवाया गया। मार्तंड वर्मा ने अपनी राजधानी का नाम भगवान पद्मनाभस्वामी के नाम से रखा, इसलिए इस महल का नाम भी पद्मनाभपुरम पैलेस पड़ा। महल परिसर में एक चार मंजिला हवेली, प्राचीन युद्ध कला से संबंधित अस्त्र-शस्त्र, दर्शनीय चित्रों की गैलरी, विभिन्न प्रकार तथा आकार के बड़े दर्पण, फर्नीचर, बर्तन, अलग-अलग राज्यों द्वारा दिए गए उपहार मौजूद हैं। हमें सबसे अनूठी बात इस महल की जो लगी, वह थी महल के प्रत्येक भाग में निर्माण एवं साज-सज्जा हेतु प्रयोग किए गए विभिन्न प्रकार के काष्ठ। इसलिए इसे सामान्य भाषा में "वुडन पैलेस" भी कह दिया जाता है। हमें यह महल बहुत अनोखा और काफी सुंदर लगा। हम अब तक काफी थक चुके थे, इसलिए हम वापस कन्याकुमारी लौट गए।

शाम को हम फिर कन्याकुमारी मंदिर के पास बने रेस्टोरेंट में भोजन करने गए। डोसा और नारियल चटनी की हमारी दीवानगी को अब "अन्ना" (तमिल भाषा में अन्ना बड़े भाई के लिए प्रयुक्त सम्बोधन है) भी समझ चुके थे और हम सभी अब केवल दक्षिण भारतीय भोजन को ही प्राथमिकता दे रहे थे। उसके बाद हम सभी "त्रिवेणी संगमम" के पास चहलकदमी करने के लिए चल पड़े। संत तिरुवल्लुवर की मूर्ति तथा विवेकानंद मेमोरियल पर लगी रोशनी समुद्र की लहरों पर पड़कर एक अलग ही आभा समुद्र-तट पर बिखेर रही थी और ठंडी-ठंडी सामुद्रिक पवन शीतलता प्रदान कर रही थी। हम सभी धीमे-धीमे कदमों से चलते-चलते इस बात से मन ही मन थोड़ा दुखी भी थे कि हमें अगले दिन वापस दिल्ली की यात्रा शुरू करनी थी। हम अगले दिन कन्याकुमारी की तमाम खूबसूरत यादों को अपने दिलो-दिमाग पर अंकित किए वापस दिल्ली लौट गए लेकिन आने वाले कई दिनों तक सुबह–सुबह ऐसा लगता था कि खिड़की खुलते ही सामने तीन रंग की लहरों को चमक प्रदान करती सूरज की किरणें समुद्र की गर्जना के साथ कमरे में प्रवेश कर रही हैं।

-ग्राहक सेवा प्रतिनिधि
आंचलिक कार्यालय दिल्ली-II

गणतंत्र दिवस समारोह – 2026

पंजाब एण्ड सिंध बैंक द्वारा भारतीय संविधान में निहित मूल्यों के प्रति अपनी प्रतिबद्धता व्यक्त करते हुए रोहिणी, नई दिल्ली स्थित अपने प्रशिक्षण केंद्र में 77वें गणतंत्र दिवस का गौरवपूर्ण आयोजन किया गया। प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी श्री स्वरुप कुमार साहा के राष्ट्रीय ध्वज फहराने के साथ ही समारोह का शुभारंभ हुआ। अपने संबोधन में श्री साहा ने गणतंत्र दिवस के महत्व पर प्रकाश डालते हुए राष्ट्र-निर्माण, समावेशी विकास, ग्राहक-केंद्रित बैंकिंग पर बल दिया। बंगाली तथा पंजाबी में प्रस्तुत समूह नृत्य प्रदर्शन, आकर्षण का केंद्र रहा। कार्यक्रम के अंत में मुख्य महाप्रबंधक श्री राजेश पांडे ने समस्त प्रतिभागियों और उपस्थित लोगों का आभार व्यक्त किया।

वेतन खाता

खोलने के लिए QR स्कैन करें

੧ੴ ਸ੍ਰੀ ਵਾਹਿਗੁਰੂ ਜੀ ਕੀ ਫ਼ਤਹਿ

पंजाब एण्ड सिंध बैंक

(भारत सरकार का उपक्रम)

पी.एस.बी

जहाँ सेवा ही जीवन - ध्येय है

एक स्मार्ट कदम
जीवन भर लाभ

पीएसबी सेंट्रल कनेक्ट बचत वेतन खाता

- ₹4.00 करोड़ का निःशुल्क वायु दुर्घटना बीमा
  ₹3.50 करोड़ का निःशुल्क वैयक्तिक दुर्घटना बीमा
- ₹20 लाख का निःशुल्क टर्म लाइफ़ इंश्योरेंस
- ₹25 हजार की साइबर धोखाधड़ी संरक्षण
- ₹ 10 लाख की सुगम ओवरड्राफ्ट सुविधा
- शून्य प्रसंस्करण शुल्क और आवास/ वाहन/ वैयक्तिक ऋणों पर रियायती ब्याज-दर
- आवास ऋण पर कोई विधिक/मूल्यांकन प्रभार नहीं एवं अंतिम 3 ईएमआई की छूट
- लाउंज एक्सेस सहित निःशुल्क रुपे सेलेक्ट डेबिट कार्ड
- निःशुल्क वार्षिक निवारक स्वास्थ्य जांच

*नियम एवं शर्तें लागू

टोल फ्री नंबर
1800 419 8300

हमें फ़ॉलो करें @psbindofficial